मासिक

अरफात किरण

रायबरेली

अरबी मदरसों की अहमियत

"इन मकतबों (मदरसों) को इसी हालत में रहने दो। ग़रीब मुसलमानों के बच्चों को इन्ही मदरसों में पढ़ने दो अगर ये मुल्ला और दरवेश न रहे तो क्या होगा? जो कुछ होगा मैं उन्हे अपनी आंखों से देख आया हूं। अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान इन मदरसों के असर से महरूम हो गये तो बिल्कुल उसी तरह जिस तरह स्पेन में मुसलमानों की आठ सौ बरसों की हुकूमत के बावजूद आज ग़रनाता और कुर्तबा के खन्डहर और अलहमरा के बाबुल ख़्वातीन के निशानों के अलावा इस्लाम के पैरूओं को और इस्लामी तहज़ीब के आसार को कोई नक़्श नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में भी आगरा के ताजमहल और दिल्ली के लाल क़िला के अलावा मुसलमानों की आठ सौ बरसों की हुकूमत और उनकी तहज़ीब का कोई निशान नहीं मिलेगा।"

अल्लामा इक़बाल रह०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

APR 12

₹10/-

दीनी मदरसों की अहमियत व किरदार

जब खुदा का आख़िरी दीन इस्लाम दुनिया में आया तो उसने सही तालीम के काम को आला दरजे की इबादत और अल्लाह की कुरबत का ज़रिया और उसको अम्बिया की नयाबत का मन्सब क़रार दिया। इसके नतीजे में पूरी इस्लामी दुनिया में आज़ाद दीनी तालीम का निज़ाम जारी हुआ, और आज़ाद दीनी मदरसों व मकतबों का एक जाल सा बिछ गया। इस्लामी दुनिया के चप्पे–चप्पे, शहरों, क़स्बों और देहातों में मदरसे और मकतब क़ायम हुए और ख़ास तौर पर मस्जिदें कुरआन मजीद और शुरूआती तालीम का ज़रिया बनीं। उस सयम के सुल्तानों की इल्मी क़द्दानी व सरपरस्ती और शौक़ व कोशिश के बावजूद अक्सर ये मदरसे और शिक्षा के केन्द्र आज़ाद रहे और इनका सीधा सम्पर्क जनता से रहा और जनता से संबंध का गहरा नफ़्सियाती असर और फ़ाएदा सामने आया जो बिल्कुल कुदरती है। इन्सान की फ़ितरत है कि जब वो किसी इदारे या तहरीक की इमदाद में बराहरास्त हिस्सा लेता है चाहे वो कितना ही कम हो तो उससे उसको एक नफ़्सियाती व जज़्बाती संबंध और लगाव पैदा हो जाता है। इसका नतीजा था कि मुस्तहकम और लम्बी मुद्दत वाली इस्लामी सल्तनतों की मौजूदगी और शाहाने वक़्त की फ़य्याज़ी, और कई बार देनदारी के बावजूद, इस बर्रेआज़म के मुसलमानों की इस्लाम से इरादी व शऊर वाबस्तगी ज़रूरत के मुताबिक़ दीनी मालूमात, और दीनी हुक्मों पर अमल करने का जज़्बा, इस आज़ाद दीनी निज़ामे तालीम और उन्ही आज़ाद मदारिस के ईसार पेशा और मुख़लिस फ़ुज़ला सई व जुहद का नतीजा है जिसमें मुस्लिम सलतनतों और फ़रमा रवाओं का लगभग कुछ हिस्सा नहीं, इतिहास व हक़ीक़त की रोशनी में बिला ख़ौफ़ तरदीद कहा जा सकता है कि इस समय तक न केवल इस दुनिया के मुसलमानों का बेशतर या सभी मुस्लिम यहां तक कि अरब देश तक के मुसलमानों का दीन व शरीअत से संबध और उनकी दीनी बाख़बरी और इस्लामी सभ्यता व संस्कृति से न केवल वाक़िफ़ होना, बल्कि उस पर हामिल होना और पुरजोश हामी होना। उन्ही ईसार पेशा, रज़ाकार और किसी हद तक ज़ाहिद व मुत्वक्किल फ़ुज़लाए मदारिस और नाशिरीन इल्म व दीन का रहीन मिन्नत है।

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह०)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक: ४ | अप्रैल २०१२ ई० | वर्ष: ४

संरक्षक

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

अध्यक्ष – दारे अरफ़ात

निरीक्षक

मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

जनरल सेकेरेट्री– दारे अरफ़ात

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी

महमूद हसन हसनी नदवी

मो० हसन नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रति अंक–10रू वार्षिक–100रू०

सम्मानीय सदस्यता–500रू० वार्षिक

www.abulhasanalinadwi.org

FAX-0535-2211386

E-Mail: markazulimam@gmail.com

इस अंक में:

समाज सुधार और हमारी ज़िम्मेदारियां.....२

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हुकूमत की तब्दीली से सबक़ और आगे के लिये ३

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

खुदा पर पूरा भरोसा.....६

मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह०

हमने ही जब ज़िन्दगी का नक़्शा बदल दिया.....८

मौलाना डाक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

हमारा ये दस्तूर नहीं.....१०

महमूदुल अज़हार नदवी

कामयाब ज़िन्दगी का राज.....११

जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

आलम–ए–बरज़ख.....१३

जनाब शेख़ नूरी

दीन–ए–इस्लाम में उस्ताद का अदब.....१५

जनाब मन्सूरुल हक़

आपके दीनी सवालात और उनके जवाबात.....१७

मुस्लिम लड़कियां तालीम के साथ तरबियत भी ज़रूरी.....१८

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

हुज़ूर स०अ० के आने की ख़ुशख़बरी देने वाला इन्जील...२०

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

समाज सुधार और हमारी ज़िम्मेदारियां

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

समाज के बिगाड़ का अगर जाएज़ा लिया जाए तो उसकी अलग–अलग सूरतें हमारे सामने आतीं हैं। जिसकी अस्ल बुनियाद ये है कि इन्सान ने अपनी इन्सानियत को फ़रामोश कर दिया है। अल्लाह की पैदा की हुई सभी मख़लूकों में इन्सान ही वो मख़लूक़ है जिसके अन्दर समझ रखी गयी है। वो अच्छे बुरे में फ़र्क़ करने की सलाहियत रखता है। इन्सानी क़द्रों की उसके यहां एक क़ीमत है। जिसको हर वो इन्सान महसूस करता है जिसके अन्दर इन्सानियत का भम्र क़ायम है। ये इन्सानी क़द्रें हर दौर में पायी जाती रहीं हैं और उनकी क़ीमत समझी गयी है लेकिन इन्सानी क़द्रों की पामाली को एक फ़लसफ़े की शक्ल दे दी गयी। अल्फ़ाइड (Alfright) के गुमराह नज़रियों पर जिस पर यूरोप के फ़लसफ़े की बुनियाद है उसमें कलीद किरदार अदा किया गया है। इस फ़लसफ़े ने इन्सान और जानवरों के फ़र्क़ को मिटा दिया है। जिस तरह एक जानवर के सामने किसी तरह की कोई पाबन्दी नहीं और न वो अच्छे बुरे के फ़र्क़ को समझता है वही सूरते हाल एक इन्सान के साथ भी पैदा की गयी है जिसको अल्लाह ने शऊर जैसी अहम दौलत से नवाज़ा है।

एक इन्सान के सामने आज सबसे बड़ी चीज़ ख़ुदपसन्दी और मज़ा है। इसको सिखाया जाता है कि हर वो काम किया जाए जिसमें मज़ा आये, उसके नतीजे चाहे कुछ भी हों, और किसी पर उसका चाहे कैसा ही असर पड़े, यूरोप के इस फ़लसफ़े ने पूरे यूरोप को खोखला कर दिया, इन्सानी कद्रों की वहां कोई क़ीमत नहीं सिवाए कुछ मज़ाहिरों के जिसको देखकर हक़ीक़त से अज्ञान एक इन्सान धोखे में पड़ जाता है।

यूरोप के इसी फ़लसफ़े को सारी दुनिया ने अपनी लपेट में ले लिया है। पश्चिमी देश जिनकी अपनी एक सभ्यता थी वो भी इसका शिकार हो रहे हैं, जिसके परिणाम में यहां का समाज भी भ्रष्ट होता चला जा रहा है।

समाज की चिन्ता करने वाले लोगों के लिये ये बात बहुत ही ध्यान देने वाली है कि वो समाज की सभी बुराइयों की तरफ़ निगाह रखें। मसला केवल दो चार चीज़ों का नहीं है। आम तौर पर लोग केवल कुछ रस्मों की इस्लाह को ही समाज की इस्लाह का नाम देते हैं। जबकि वाक़्या ये है कि जब तक समाज की सभी बुराइयों को दूर करने की कोशिश नहीं की जाएगी, उस समय तक केवल कुछ रस्मों की इस्लाह से समाज को बुलन्द मक़ाम पर नहीं लाया जा सकता है। अगर ग़ौर किया जाए तो इन सभी बुराईयों के पीछे दो बुनियादें नज़र आती हैं। एक दौलत की हद से बढ़ी हुई मुहब्बत और दूसरी बढ़ती हुई बेहयाई। जहेज़ की मांग, शादियों में फ़िज़ूल ख़र्ची, विरासत का सही बंटवारा न करना, फिर ख़राब तालीम और उसके नतीजे में ख़ानदानों में बिखराव होना, ये सारी चीज़ें हमारे समाज के माथे पर कलंक के टीके से कम नहीं। फिर उसमें बड़ा किरदार प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया का है जिसने बुराइयों को फ़नकारी बना दिया है। और ये हमारे देश के शासकों ने इन ख़बासतों को हरी झन्डी देने का फ़ैसला कर लिया है, जिन बुराइयों को अब तक यहां बुरा समझा जाता रहा है, अब उनको बुराइयों के ख़ाने से निकाल कर "फ़न" के ख़ाने में फ़िट करने की कोशिश की जा रही है।

इस हाल में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी हम मुसलमानों की है। हमारे पास वो बुलन्द अख़लाक़ी कद्रें हैं जिनको दुनिया पामाल कर चुकी है। इन्सानियत का वो जौहर अब भी मुसलमानों के अन्दर मौजूद है जिससे दुनिया की दूसरी क़ौमें ख़ाली हो चुकी हैं। हमें इसकी रोशनी को बढ़ाने की ज़रूरत है। मुसलमानों के समाज में जो अमानवीय स्तर दाख़िल हो रहे हैं उनको रोकने की ज़रूरत है। ख़ास तौर पर दौलत की मुहब्बत और बेहयाई की लानत जिसका मुसलमान भी तेज़ी से शिकार हो रहे हैं। और ये दोनों चीज़ें मुस्लिम समाज में एक सैलाब की तरह दाख़िल हो रही है। इसके लिये बांध बांधने की ज़रूरत है। और ये काम केवल कुछ लोगों का नहीं है बल्कि हर वर्ग के लोगों को मिलकर ये काम करना होगा। आग जब लगती है तो सबको दौड़ना पड़ता है और जो जिससे बन पड़ता है वा करता है कि किस तरह आग बुझ जाए। आज बुराइयों की आग जो घर–घर लग रही है उसको बुझाने के लिये सबको आगे आना होगा।

(शेषः पेज 16 पर)

हुकूमत की तब्दीली से सबक़ और आगे के लिये सही तरीक़ा

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

किसी लोकतान्त्रिक देश में शासन के बदलाव और एक पार्टी से दूसरी पार्टी की तरफ़ शासन, क़यादत, और देश के नज़्म व नस्क़ के अख़्तियार का मुन्तिक़ल होना कोई अनोखी, तशवीशनाक और परेशान करने वाली बात नहीं। बल्कि ये लोकतन्त्र की एक सेहतमन्दाना पहचान है। एक ही पार्टी के हाथ में देश का शासन व व्यवस्था का मुस्तक़िल तौर पर या बिला इस्तहक़ाक़ व तरजीह बहुत समय तक रह जाने का मतलब ये है कि देश का पट्टा उसके नाम लिख दिया गया चाहे देशवासी उसे पसन्द करें या ना पसन्द करें। उनके मसले हल हों या न हों, उनके अधीन रहना है। अगर कोई पार्टी या शासन (अपनी कोताहियों या ख़ामियों या ग़लत और मुबालग़ा आमेज़ मुख़ालिफ़ तासुर के कारण) शासन से महरूम हो जाती है। और इस्लाह व तरक्क़ी के बाद फिर शासन में आ सकती है। और नयी शासन में आने वाली पार्टी अपनी ख़ामियों और कोताहियों, और अपने किये हुए वादों को पूरा न करने के कारण शासन से वंचित हो सकते हैं। इस तरह हर सियासी पार्टी को न केवल जद्दोजहद करने का न केवल मौक़ा है बल्कि ये इसके लिये एक ताक़तवर मुहरिक और अपने लाभ से लाभ तर बनाने और शासन के योग्य साबित करने का साधन है। जो बहरहाल देश व जनता के लाभ में है।

किसी राजनीतिक पार्टी या शासन की योग्यता साबित करने का बिला तरजीह व इसतहक़ाक़ के लम्बे अर्से तक अधिपत्य पर रहने की शक्ल में इस धर्म निरपेक्ष शासन और राजनीतिक व क़ानूनी हुकूमरा जमाअत में वो सब मआइब और कमज़ोरियां पैदा हो सकती हैं। जो पुराने ज़माने में लम्बी ख़ानदानी मुद्दत व मोरोसी सलतनत और हुक्मरां ख़ानदानों में पैदा हुईं और जिनकी तफ़सीलें और मिसालें हर एक मुल्क की तारीख़ में मौजूद हैं। ये फ़ितरत इन्सानी है। जिससे बचना और जिससे ग़ालिब आना लगभग फ़ितरत के ख़िलाफ़ और क़यास के आगे का वाक़्या है।

लेकिन हकूमतों और पार्टियों की इस तब्दीली से कहीं ज़्यादा ख़तरनाक बात ये है कि उन कारणों पर ग़ौर न किया जाए जो पिछले शासकों के पतन का कारण हुए। और उन्होने इस बदलाव के लिये राह आसान की। और इन वाक़्यो, अनुभवों और लोगों के ख़्यालों से फ़ायदा न उठाया जाए। जो पिछली हुकूमत और शासन के बारे में उनकी कोताहियों की साधारण प्रतिक्रिया के तौर पर पैदा हुए थे। दुनिया के इतिहास का एक अच्छा छात्र इस बात से वाक़िफ़ है कि पिछले ज़माने में इन हुकूमतों और शहंशाहों को भी पतन का सामना करना पड़ा जिनका दुनिया में डंका बजता था। और वो उस समय की सभ्य दुनिया के बड़े हिस्से पर क़ाबिज़ थे। जब उन्होने वाक़्यों, हक़ीक़तों और ज़रूरी मसलों से आंखे बन्द कर लीं और पेश आने वाले वाक़्यों से कोई सबक़ नहीं लिया, पुराने इतिहास में रोमतुल कुबरा (The great Roman Empire) का और क़रीब के ज़माने में बर्तानिया का और फ्रांस का नाम लिया जा सकता है। जो संख्या में बहुत, नौ आबाद देवन और ऐशिया और अफ़्रीक़ा के बहुत से इलाक़ों पर हुकूमत कर रहे थे। कम्यूनिस्ट रूस के वर्तमान शासन ने भी अपनी व्यवस्था की कुछ कमज़ोरियों और ज़िन्दगी, व्यवस्था, और देश की ख़ुशहाली व उन्नति की राह में इसकी नाकामियों और कमियों को स्वीकार किया है। और इसकी रोशनी में कुछ इस्लाहात और बदलाव के लिये एहतियात व सुरक्षा के साथ क़दम उठाया है। और इसी अख़लाक़ी जुर्रत व हक़ीक़त पसन्दी की बिना पर यूरोप की बहुत सी कम्यूनिस्ट हुकूमतों और मुल्कों में (महदूद व मोहतात पैमाने पर) बदलाव आ रहे हैं। ख़ुद चीन में इस बेचैनी और ख़्याल की आज़ादी की परछाईं नज़र आती है। और ऐसा होना ज़रूरी है और सोचने समझने वाले दिमाग़ और रवां दवां ज़िन्दगी का ख़ासा है।

हम निम्न में से किसी राजनीतिक पार्टी या शासन की हिमायत या विरोध के भाव से आज़ाद होकर और बग़ैर किसी पक्षपात के उन कुछ हक़ीक़तों और वाक़्यों और ज़रूरी मसलों की तरफ़ इशारा करना चाहते हैं जिनको सबसे अव्वल अहमियत देना और उन पर पूरा ध्यान देना हर शासन करने वाली पार्टी और हर प्रशासन का सबसे पहला फ़र्ज़ है। और उनसे निगाहें चुराना या उनके बारे में ग़फ़लत व सुस्ती उस हुकूमत या इन्तिज़ामिया, बल्कि उस सियासी पार्टी के लिये भी जबकि ये शासन नुमाइन्दगी करता है, जहर है, क़ातिल है, हम यहां बहुत ही संक्षेप में क्रमवार इन हक़ीक़तों और ज़रूरतों का ज़िक्र करते हैं:

1.देश वासियों की जान व माल व इज़्ज़त व आबरू की रक्षा सुकून और संतुलित वातावरण (Normalcy) को हर क़ीमत पर बाक़ी व क़ायम रखना और अगर इस देश में धार्मिक अल्पसंख्यक पाये जाते हैं तो उनके धर्म, इबादतघर, पर्सनल लॉ (Personal Law) और किसी अल्पसंख्यक

को अपनी ज़बान प्यारी है और उसमें उसका धार्मिक सार है तो उसकी भाषा व लिखावट का बाक़ी रखना ज़रूरी है। इसलिये कि एक बड़े राजनीतिक पण्डित के अनुसार, "बचाव ही काफ़ी नहीं बचाव का एहसास और इत्मिनान भी ज़रूरी है"

2.हमारा ये महान देश ख़ास तौर पर इस सिलसिले में बड़े ध्यान, मेहनत और ज़िम्मेदारी का एहसास व एहतियात का मुसतहिक़ है की ये एक ऐसी अत्यधिक आबादी वाला देश है जो विभिन्न नस्लों और वर्गों, और महान धर्मों का देश है जहां उन्होने शानदार ऐतिहासिक किरदार अदा किया है। इस देश की ख़िदमत की है और इसको उन्नति दी है। फिर दुनिया से उन देशों से जहां उन लोंगों की अधिकता पायी जाती है यहां विभिन्न कारणों के आधार पर जिनसे बहस करना सूद और वाक़्यों की मनतिक़ के ख़िलाफ़ हैं। ज़्यादा मज़हबियत और दीनी एहसास व हमीयत पायी जाती है। इसलिये यहां बहुत फूंक फूंक कर क़दम रखने की ज़रूरत है। और उन मज़हबी अक़लियतों की इस मज़हबी आज़ादी में जो जारहाना (Offensive) और अमन आम्मा के ख़िलाफ़ नहीं। और उनके इस पर्सनल लॉ में जो उनके धर्म का हिस्सा है। और धार्मिक शिक्षा और उनके केन्द्रों और इदारों जो देश के लिये ख़तरनाक होने के बजाए शिक्षा व सभ्यता फैलाने और दूसरे देशों में इस देश का नाम बुलन्द करने का ज़रिया है। किसी नाम या किसी इन्तिज़ामी क़ानून की बिना पर मदाख़लत करना उस अक़लियत के दिल व दिमाग़ में जो कई देशों में पूरी पूरी आबादी से ज़्यादा सख़्या में है बेइत्मिनानी व बेचैनी पैदा करने का कारण होगा। और देश के निर्माण व उन्नति, और उसके हिस्सों के लिये मुख़लिसाना जद्दोजहद व तआउन पर असर अन्दाज़ होगा। इसलिये हिन्दुस्तान के इस फ़ख़्र के क़ाबिल आइन की जो बड़े खुले हुए ज़हन और हक़ीक़त पसन्दी के साथ बनाया गया था। इस दफ़ा पर दयानत दारी और मज़बूती से अमल करने की ज़रूरत है कि "हर अल्पसंख्यक को अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ शिक्षा की संस्थांए कायम करने और उनको चलाने की इजाज़त व हक़ होगा।" किसी सियासी पार्टी या शासन के लिये बहुसंख्यकों व अल्पसंख्यकों के इन मसलों व मामलों में मदाख़िलत करके उनमें ग़ैर ज़रूरी बेचैनी पैदा करने और अपनी क्षमताओं को देश के निर्माण व उन्नति और अपने कर्तव्य अदा करने के बजाए अपने धर्म अन्तर्राष्ट्रीय क़ानून, शिक्षा या सभ्यता व ज़बान के मसलों पर ध्यान देने का साधन बनना हरगिज़ दानिशमन्दी और हक़ीक़तपसन्दी की बात नहीं।

3. जहां तक देश व आबादी की जान व माल और इज़्ज़त व आबरू के बचाव का सवाल है ये हर हुकूमत का पहला फ़र्ज़ है और इसके बग़ैर वो हुकूमत या इन्तिज़ामिया, हुकूमत या इन्तिज़ामिया कहलाने की मुस्तहिक़ नहीं। ऐसी बड़ी आबादी वाले देश में विभिन्न धर्मों, सभ्यताओं और नस्ली व ख़ानदानी वर्गों और सामाजिक व जमाअत के वर्गों (Classes) पर आधारित है। सबसे ज़्यादा ख़तरनाक चीज़ हिंसा (Violence) का रूझान है। जो व्यक्ति व बिरादरी से आगे बढ़कर फ़िरक़ा वाराना फ़सादों की शक्ल अपना लेता है और जिसके नतीजे में हज़ारों बेगुनाह इन्सान, औरतें और बच्चे क़त्ल व सफ़्फ़ा का निशाना बनते हैं और देश के विभिन्न हिस्से बाइज़्ज़त और महफ़ूज़ ज़िन्दगी गुज़ारने, आर्थिक जद्दोजहद और बक़ाए बाहम के बजाए मैदाने जंग बन जाते हैं। गांधी जी ने सही तौर पर इस हिंसा को इस देश के लिये सबसे ख़तरनाक काम समझा। उनके सारे आन्दोलन व जद्दोजहद अहिंसा पर आधारित थे। अब भी देश की सलामती के बचाव और सुकून भरी और विश्वास भरी ज़िन्दगी गुज़ारने का मौक़ा देने के लिये हिंसा के रूझान को हर क़ीमत पर ख़त्म करने और अहिंसा और आपसी बचाव का वातावरण बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। जहां तक शासन का संबध है वो हर समय इस पर क़ाबू पा सकता है। केवल ख़ुलूस, इरादा व फ़ैसला व साफ़ बात करने की आवश्यकता है। इसका कई बार अनुभव हो चुका है कि जब स्थानीय प्रशासन और पुलिस को ये मालूम हो गया कि रियासती हुकूमत और इसमें कुछ सुस्ती पायी जाती है या कोई सियासी मसलिहत काम कर रही है तो केन्द्र सरकार इसको पसन्द नहीं करती और उसका एक इशारा भी (अगर वो पूरे फ़ैसला और दयानतदारी के साथ हैं) फ़साद को रोकने के लिये काफ़ी होता है, और कुछ घन्टों के अन्दर हालात क़ाबू में आ जाते हैं।

4. इस सिलसिले में शासन की हदों से बाहर भी काम करने की आवश्यकता है। हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी इन्डियन नेशनल कांग्रेस जिसके सर आज देश की आज़ादी का सेहरा है के इतिहास की भी ये वेदना है कि वो गर्वमेन्ट और शासन में सिमट कर रह गयी है। इसकी शुरूआत एक मुल्कगीर आन्दोलन से हुई थी। और इसी में इस ताक़त का राज़ था। लेकिन आन्दोलन ख़त्म हो गया और शासन व प्रशासन रह गया। आवश्यकता है कि इसके लिये पूरे देश के दौरे किये जांए और जगह जगह जलसे और बयान हों। प्रेस, मीडिया से मदद लेकर इसके ख़िलाफ़ ज़हन तैयार किया जाए। निसाब की किताबों से वो सबक़ निकाले जांए जो फ़िरक़ावाराना वातावरण पैदा करते हैं और नई नस्ल के दिमाग़ों को ज़हर आलूद बनाते हैं। और इनका असर आख़िर उम्र तक नहीं जाता। प्राइमरी स्कूलों से लेकर

यूनीवर्सिटी के स्टेज तक इन्सानियत का एहतराम, देश से सच्ची मुहब्बत, इन्सान से दोस्ती और हिमायों के अधिकारों पर ज़ोर देने वाले और अख़लाक़ी सबक़ हों।

5. इसी के साथ फ़िरक़ा वाराना वातावरण पैदा करने वाली जमाअतों पर पाबन्दी लगायी जाए। और उनको अपने मज़हब के जज़्बातों से खेलने और उनको मुशतअल करने की इजाज़त न दी जाए। ये एक कड़वी सच्चाई है कि हमारा ये महान और गर्व करने योग्य देश सियासी शऊर और दूरदृष्टि की लिहाज़ से अभी बचपन के दौर में है। इसीलिये एक अरसे तक धार्मिक जलसों और उनके नारों पर पाबन्दी लगाने की ज़रूरत है कि वही अक्सर फ़िरक़ावाराना फ़साद के कारण होते हैं। और झगड़े का वातावरण अक्सर तसादुम के मौक़े पर पैदा करते हैं। इसलिये उन पर कलयतन पाबन्दी लगाने या उनके नक़ल व हरकत को महदूद व पाबन्द करने की ज़रूरत है।

इस सिलसिले में एक और हक़ीक़त की ओर ध्यान दिलाना मुनासिब होगा जिसका लेखक ने पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम एक ख़त में जाहिर किया था इतिहास को उलटे पांव सफ़र कराना अनावश्यक मुश्किलें पैदा करने का कारण होगा। ये एक सोया हुआ शेर है जिसको जगाना होशमन्दी की बात नहीं। विभिन्न वर्गों की इबादत गाहों से संबंधित इतिहास के खन्डहर से सही या ग़लत जानकारी निकाल कर उनको अपनी शक्ल में लाने की मांग देश को हेजान में बदल देगी। और ये सिलसिला ख़त्म होने को नहीं आयेगा। मैंने सबसे पहले उनको राय दी थी फिर पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी से भी कहा था कि सरकार खुले तौर पर इस बात का ऐलान कर दे कि हर वर्ग की इबादतगाहें उसी शक्ल में रहेंगी जिस शक्ल में वो बंटवारे (15 अगस्त 1945 ई0) से पहले थीं। किसी वर्ग को किसी वर्ग की इबादत गाह पर क़ब्ज़ा करने या उसको ढ़हा कर पुरानी शक्ल में लाने की इजाज़त नही दी जाएगी।

अब वर्तमान शासन और प्रशासन को भी बहुत मुख़लिसाना राय है कि वो उन इबादतगाहों और पवित्र जगहों में से किसी एक का बदलाव, या दूसरे वर्ग को क़ब्ज़े की इजाज़त न दे और इतिहास को पीछे ले जाने के बजाए आगे ले जाने की कोशिश की जाए कि ज़िन्दगी चलती रहे। दुनिया तेजी से तरक्क़ी कर रही है और हमारे देश को ख़ास तौर से बहुत ही नाज़ुक मसले का सामना करना पड़ रहा है। इस देश को इन्सानियत दोस्ती, अमन पसन्दी और अख़लाक़ी मूल्यों को अपना कर दुनिया की अख़लाक़ी क़यादत का मनसब संभालना चाहिये। जो हमारी रिवायत और इतिहास के अनुसार है। और दुनिया की बड़ी ताक़तें इस सिलसिले में नाकाम बल्कि बदनाम हो चुकी हैं।

इस सब के साथ इस हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता हूं कि इस देश की लचर शासन व्यवस्था, फ़र्ज़ का ठीक ढ़ंग से अन्जाम न देना, रिश्वत खोरी और पैसे का लालच अपनी इन्तिहा को पहुंच चुका है। इसके ख़िलाफ़ एक बड़ा जनता का आन्दोलन, जद्दोजहद, अख़लाक़ी तहरीकें और व्यवस्था की चौकसी और काम को अन्जाम देने की आवश्यकता है कि शासन में काम करने वालों और हर जगह के अमले को जल्द से जल्द ये बात मालूम हो जाए कि इस हुकूमत में अब बिल्कुल इसकी गुन्जाइश नहीं। इससे जनता में आत्मविश्वास, शासन की क़द्र और एक बड़ा ख़ुश गवार बदलाव का एहसास होगा जो कि देश के लिये फ़ायदेमन्द भी है।

आख़िर में एक धार्मिक और अख़लाक़ी और दुनिया के इतिहास पर नज़र रखने वाले एक शुभचिन्तक व कर्तव्य निष्ठ इन्सान की हैसियत से इस हक़ीक़त की तरफ़ ध्यान दिलाना चाहता हूं कि अस्ली व भविष्य की कामयाबी और जीत नियमों पर अमल करने में है। चाहे सतही व आजिलाना नज़र में उसके ख़िलाफ़ नज़र आता हो, ये हक़ीक़त भी सामने रहनी चाहिये कि इस कायनात की पैदा करने वाली हस्ती और इन्सानों के बनाने वाले को जिस पर सभी धर्म वालों का ईमान है सबसे ज़्यादा ज़ुल्म, सफ़ाकी और नाइन्साफ़ी नापसन्द है और देशों और क़ौमों की बक़ा व फ़ना , उरूज व ज़वाल के सिलसिले में यही ख़ैर निर्णायक साबित हुई है।

उम्मीद है कि इन बिन्दुओं और इन मुख़लिसाना मशवरों पर संजीदगी से ग़ौर किया जाएगा जो केवल ख़ुलूस, देश की मुहब्बत, पुराने अनुभवों की कड़वाहट, और भविष्य के ख़तरों के एहसास ने लिखवाये हैं और जिनके पीछे कोई सियासी ग़रज़ या इज़्ज़त व इक्तेदार की कोई ख़्वाहिश नहीं।

शहादत की मौत

"لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّى كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ"

एक हदीस में है कि जो मुसलमान बीमारी के ज़माने में ४० बार ये आयते करीमा पढ़ ले और उसी मर्ज़ में मौत हो जाए तो शहीद का दर्जा पायेगा। और अगर ठीक हो गया तो उसके सारे गुनाह बख़्श दिये जाते हैं। इसी तरह अगर किसी शख़्स को कोई सख़्ती, मुसीबत या परेशानी दरपेश हो तो इस आयते करीमा के पढ़ने से दूर हो जाएगी और उसके ज़रिये जो भी दुआ की जाएगी तो अल्लाह तआला ज़रूर उसको कुबूल फ़रमाएंगे। (तिरमिज़ी)

खुदा पर पूरा भरोसा

मौलाना मुहम्मदुल हसनी रह०

इम्तहानों से गुज़रकर मंज़िल तक पहुंचना कुर्बानी देना और ज़िन्दगी का इस्तहक़ाक़ साबित करना हर ज़िन्दादिल और बाशऊर क़ौम के लिये एक ऐसी शर्त है जिसके बग़ैर वो दुनिया के नक़्शे में किसी हैसियत से कोई अहम व श्रेष्ठ जगह नहीं बना सकती है।

ये तो हर क़ौम का हाल है जिसमें किसी मज़हब, नस्ल और देश, वतन की क़ैद नहीं लेकिन मुस्लिम क़ौम इस आम क़ानून पर पूरी उतरने के साथ दो चीज़ों में दूसरी क़ौमों से अलग व श्रेष्ठ है।

एक तो ये कि उसकी ज़िन्दगी के नक़्शे में इम्तहानों, मुश्किलों और कुर्बानियों व आज़माइशों को एक ऐसा तक़द्दुस हासिल है और उन कुर्बानियों के बारे में ऐसी नेमतें मिलने वाली हैं जिनके बाद ये ज़िन्दगी दुश्वार और मौत आसान लगने लगती है।

दूसरे ये कि इन इम्तहानों और आज़माइशों कारण व शर्तों का पूरा सिलसिला है। ये आज़माइश अंधे की लाठी नहीं है जिसमें मुजरिम और बेगुनाह सज़ा के क़ाबिल और ईनाम के क़ाबिल किसी की पहचान न हो। न ये ज़ाहिरी हालात का कुदरती नतीजा है जिनकी कोई ज़ाहिरी तौजीह मुमकिन न हो। बल्कि ये ज़ाहिरी हालात भी अल्लाह की कुदरत के फ़ैसले व मशीयत का नतीजा है। इसलिये जब कोई मोमिन किसी आज़माइश से दो चार होता है तो इसको इसकी फ़िक्र व जुस्तुजू होती है कि इस मुसीबत का अस्ल कारण क्या है?और इसको दूर करने के क्या उपाय हैं?

जहां तक कि इन कुर्बानियों व पवित्रता और उनकी महानता का संबंध है जो मुसलमानों से इस सिलसिले में किये गये हैं?कुरआन व हदीस में जगह–जगह बहुत ख़ास अन्दाज़ में इसका ज़िक्र है। बार–बार अलग–अलग कारणों और विभिन्न जगहों पर इसको दोहराया गया है। इसलिये अहले ईमान के लिये अल्लाह तआला का साफ़ इरशाद है: (अनुवादः और हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे किसी क़द्र ख़ौफ़ व फ़ाक़ा से और माल और जान और फलों की कमी और ऐसे सब्र करने वालों को बशारत सुना दीजिए जिनकी ये आदत है कि उन पर कोई मुसीबत पड़ती है तो वो कहते हैं कि हम तो अल्लाह तआला ही कि मिलिक्यत है और हम दुनिया से अल्लाह तआला ही के पास जाने वाले हैं। उन लोगों की तरफ़ से ख़ास ख़ास रहमतें परवदिगार की तरफ़ होंगी और आम रहमत भी होगी और यही लोग हैं जिनकी हक़ीक़त–ए–हाल तक रसाई होगी)

इस आयते करीमा से साफ़ मालूम होता है कि इम्तिहानों की ये सभी क़िस्में मुसलमानों के दर्जे में तरक़्क़ी और खरे–खोटे की पहचान के लिये ज़रूरी है। इसके लिये बशारत उन सब्र करने वालों को दी गयी है जो हर मुसीबत के समय खुदा की तरफ़ रूजुअ करते हैं। सब्र का मतलब ये नहीं कि सब्र करके घर बैठ जाए या इन्नालिल्लाहि पढ़ कर सर का बोझ उतार लिया जाए या मातम या नौहा शुरू कर दिया जाए बल्कि साबिरों से मुराद वो लोग हैं जो ऐसे नाज़ुक मौक़े पर कोई शिकायत ज़बान पर नही लाते, न अपनी क़िस्मत का मातम करते हैं, न ज़माने का शिकवा, न दूसरों को इल्ज़ाम देकर अपने को बेक़ुसूर समझते हैं। बल्कि इस्तिक़ामत और सब्र का सुबूत देते हुए खुदा की तरफ़ रूजुअ करते हैं। अपना ईमान और यक़ीन नये सिरे से ताज़ा करते हैं। अपनी ज़िन्दगी का जाएज़ा लेते हैं और ये देखते हैं कि इसमें क्या कमियां हैं जिनको शर्मिन्दगी के आंसू से पाक करने की ज़रूरत है। क्या वो ऐसे बुरे आमाल व बुरी आदतें हैं जो खुदा को नाराज़ करने वाली और उसकी रहमत की निगाह के लिये पर्दा बन रही हैं। इन मुसीबतों व मुश्किलों का हल उनके नज़दीक अल्लाह की तरफ़ झुकने और फ़िर उसकी इनाबत पर इस्तिक़ामत है और बस।

कुरआन मजीद का इरशाद है: (कुछ मुसलमान जो कुफ़्फ़ार की तकलीफ़ों से घबरा जाते हैं तो क्या उन लोगों ने ये ख़्याल कर रखा है कि वो इतना कहने पर छूट जांएगे कि हम ईमान ले आये और उनको आज़माया न जाएगा और हम तो उन लोगों को भी आज़मा चुके हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं तो अल्लाह तआला उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे थे और झूठों को भी जानकर रहेगा)

दूसरा और बहुत अहम पहलू ये है कि हमें देखना चाहिये कि आज़माइशें क्यों आती हैं और ये मुसीबतें क्यों नाज़िल होती हैं। कुरआन मजीद का साफ़ ऐलान है:

(और खुदा ने उनपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वो खुद अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं)

ये दरअस्ल उन अन्दरूनी और हक़ीक़ी कारण की तरफ़ इशारा है जो ज़ाहिरपरस्त या ज़ाहिर में इन्सानों को नज़र नहीं आते, और वो इनका इलाज इन सतही, वक़्ती और ज़ुज़वी चीज़ों से करना चाहता है जो कई बार उनके लिये और सर का दर्द बन जाता है। और मुसीबत और बड़ी मुसीबत बन

जाती है। वो ज़ाहिरी और भौतिक कारणों के जाल में इस तरह फ़सें है कि कारण बनाने वाले की तरफ़ उनकी नज़र ही नहीं जाती। हालांकि कुरआन मजीद की केवल यही एक आयत हमको लरज़ा देने के लिये काफ़ी है:

(अनुवाद: क्या उनको दिखाई नहीं देता कि ये लोग हर साल में एक बार दो बार किसी न किसी आफ़त में फंसते रहते हैं मगर फिर भी बाज़ नहीं आते और न वो कुछ समझते हैं)

सब ईलाज बरहक़ और अपनी–अपनी जगह सही हो सकते हैं। एहसास का जगा हुआ होना भी ज़रूरी है। इहतिजाज और नज़दीकी का इज़हार भी बिल्कुल कुदरती और ज़िन्दगी की पहचान है। मज़लूमों की मदद और ग़मख़्वारी भी बिलाशक एक ज़रूरी काम है और वक़्त की मांग है। वर्तमान पीढ़ा अपनी इस दर्दनाकी के पेशनज़र जिसकी ज़िन्दा शहादत उन बेगुनाहों का खून है जो गुन्डागर्दी और तश्द्दुद का शिकार हुए और जिसकी बोलती हुई तस्वीर वो हज़ारों बर्बाद इन्सान हैं जिनके घर वीरान और बेचिराग़ हैं। और जिनको इस वक़्त एक वक़्त का खाना और पहनने के लिये कपड़ा भी नसीब नहीं मदद का तालिब है और हन्गामी हल चाहता है।

क्या हमने वाक़्यों के बाद कभी ये सोचा है कि उसको राज़ी करने की कोशिश क्यों न करें जिसके हाथ में हर चीज़ की बाग़डोर है और जिसकी कुदरत में आसमान और ज़मीन की सारी नेमते और सारी दुनिया की ताक़तें हैं। और जिसको राज़ी करने से न केवल दुनिया में इज़्ज़त और बुलन्दी व सुकून व इत्मिनान हासिल हो सकता है। बल्कि आख़िरत की न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी और न ख़त्म होने वाली नेमतें भी मिल सकती हैं। जहां आदमी को हमेशा–हमेशा के लिये रहना है।

हम ज़ाहिरी और सियासी साधनों पर तो भरोसा करते हैं लेकिन हमारी वो बुनियाद बेहद कमज़ोर है जिस पर इन अधिकारों की ज़मानत की गयी है। वो बुनियाद है खुदा के वादों पर सच्चा यक़ीन, खुदा पर पूरा भरोसा और खुदा के रास्ते में जान व माल की कुर्बानी का जज़्बा और ज़िन्दगी के हर हिस्से में खुदा की पूरी पैरवी और इताअत का फ़ैसला, सब्र के साथ ज़िन्दा रहने का जज़्बा।

इस लिहाज़ से देखिये तो साफ़ नज़र आयेगा कि हम उन शर्तों में से कोई भी शर्त पूरी नहीं कर रहे हैं। जिन पर अमन व इत्मिनान और इज़्ज़त व सरबुलन्दी की ज़मानत है।

जहां तक खुदा के वादों पर सच्चा यक़ीन और पूरे भरोसे का संबंध है इसका हाल हम सब को खूब मालूम है। चार छः आने के नुस्खे पर हमको जो यक़ीन है दुआ पर उसका दस फ़ीसद भी नहीं। जितना भरोसा हमको अपनी नौकरी, व्यापार और बिज़नेस पर है उतना भरोसा हमको अल्लाह तआला की रज़्ज़ाक़ियत और रहमत पर भी नहीं है। हम अख़बार पर यक़ीन कर सकते हैं जिनके झूठों और नाइंसाफ़ियों बल्कि ग़लत बयानियों का अनुभव हमको बराबर होता रहता है। डाक्टरों और हकीमों पर भरोसा कर सकते हैं जिनके उपायों और दवाइयों पर अक्सर इख़्तिलाफ़ होता है। हम राहगीरों की बात भी ध्यान से सुन सकते हैं और उस पर यक़ीन भी कर सकते हैं लेकिन जिस चीज़ पर हमारा भरोसा दिन पर दिन कमज़ोर होता जा रहा है वो खुदा के वादों और उसकी शर्तों को पूरा करने के नतीजे हैं।

हममें से कितने हैं जिनके दिल में ये है कि अगर फ़लां व्यक्ति या फ़लां जमाअत न होगी तो हमारे लिये कितनी परेशानियां पैदा हो जांएगी। फ़लां हल्क़ा बिरादरी या जमाअत नाखुश हो जाए तो सारी इज़्ज़त, नेकनामी, जाती रहेगी। फ़लां अफ़सर या हाकिम नाराज़ हो जाएगा तो नऊज़ बिल्लाह रिज़्क़ के दरवाज़े बन्द हो जांएगे और आगे की ज़िन्दगी अंधेरी हो जाएगी। शायर ने शायद इसी सूरत को सामने रखकर कहा था।

बुतों से तुझको उम्मीद और खुदा से नाउम्मीदी।
मुझे बताओ तो सही और काफ़िरी क्या है।।

एक दूसरी चीज़ जिसकी तरफ़ ध्यान दिलाना ज़रूरी है वो ये है कि पुराने ज़माने के बाद की सदियों में भी मुसलमानों का ये हाल था कि कोई बड़ा क़दम उठाने से पहले या किसी ग़ैर मामूली वाक़्या और नाज़ुक हालात में जिसमें मुसलमानों के लिये बज़ाहिर ख़तरा नज़र आता है वो पहले अपनी तरफ़ से इत्मिनान कर लेते, फिर उसके बाद चारों तरफ़ का जाएज़ा लेते। वो ये देखते थे कि हम में मासियत तो आम नहीं हो गयी है। हमारी जमाअत में बिख़राव व अलगाव तो नहीं। हमारे अन्दर हिस्र और दुनिया की मुहब्बत तो नहीं पैदा हो गयी है। इस तरफ़ से इत्मिनान हो जाता तो उनका डर दूर हो जाता था और वो महसूस कर लेते थे कि फिर अल्लाह तआला हमको बर्बाद नहीं करेगा। ये सोचने का अन्दाज़ "शाह कलीद" है जिससे ज़िन्दगी का हर कुफ़्ल खुल सकता है। एक–एक चीज़ के लिये फ़रियाद करने, दर–दर हाथ फैलाने और हर किस व नाक़िस की खुशामद करने से बेहतर ये है कि अपने ईमान, अपने इख़लास, अपने अमल और अपनी कुर्बानी से उस खुदा को राज़ी करने की फ़िक्र की जाए जिसके हाथ में सब कुछ है और जिसके हक़ीक़ी नाम लेवाओं और जिसके नबी के अदना गुलामों का ये हाल है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी सलतनतें और हुकूमतें मिट्टी के घरौंदों और संगरेज़ों से ज़्यादा हैसियत नहीं रखतीं।

हमने ही जब ज़िन्दगी का नक़्शा बदल दिया

मौलाना डॉक्टर सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

आज अगर इन्सानी सोसाइटी में ये सवाल रखा जाए कि दुनिया में सबसे ज़्यादा मामूली चीज़ क्या है?तो बग़ैर किसी देर के हर ओर से यही जवाब मिलेगा कि इन्सान का खून आज के दौर में सबसे ज़्यादा मामूली और बेक़ीमती हो चुका है। ख़ासकर मुसलमानों का खून जो मौक़ा बे मौक़ा बड़ी ही दरिया दिली के साथ बहाया जा रहा है। हम दिन रात इस हक़ीक़त को देखते हैं इस्लाम के दुश्मनों के भड़काये हुए जंग के शोले, इस्लाम दुश्मनों के महाज़ों के पैदा किये हुए सामाजिक व राजनीतिक संकट मुसलमान उम्मत पर ख़ाश रखने वालों की लायी हुई मुश्किलें व पेचीदगियां दिन ब दिन मुसलमानों की ताक़त को कमज़ोर और उनके अस्तित्व को चैलेंज कर रही हैं। उनकी इज़्ज़त व आबरू ख़तरे में है। माल को बेदर्दी से लूटा जा रहा है। मुसलमानों के बेशक़ीमती खून की नदियां बह रहीं हैं लेकिन इसके बावजूद हमारी ग़फ़लत के पर्दे नहीं हटे। मौजूदा ख़राब हालत को देखकर हमारी ज़िन्दगी में कोई बेचैनी व बेक़रारी की कैफ़ियत पैदा नहीं हुई बल्कि हम अपने नज़रयाती, मज़हबी और ग़ैर ज़रूरी इख़्तलाफ़ों का शिकार हैं। हालांकि मुसलमानों की खुसूसियत ही ये थी कि मुहब्बत व भाईचारगी उनकी इम्तियाज़ी विशेषता हो, अल्लाह तआला का इरशाद है: "अनुवादः मोमिन मर्द और औरतें आपस में एक दूसरे के सहयोगी और खैरख़्वाह हैं"

छटी सदी मसीही की दुनिया पर एक नज़र डालने से ये हक़ीक़त और भी साफ़ हो जाती है कि जिस वक़्त इन्सान की जानों की कोई क़ीमत बाक़ी नहीं रह गयी थी, दुश्मनी के भड़कते हुए शोले इन्सानी जानों को जला कर ख़ाक़ कर रहे थे। जंग व जदाल और क़त्ल व क़िताल का एक ना ख़त्म होने वाला सिलसिला था। तलवारें इन्सानों का खून पीकर भी सैराब नहीं हुईं। बुग्स व इन्तिक़ाम की प्यास खून की नदियां पीकर भी नहीं बुझती थीं। लेकिन जब इस्लाम आया और कुफ़्र की तंग व अंधेरी कोठरी से निकल कर लोग ईमान व यक़ीन की खुली हुई बहार में ज़िन्दगी बिताने लगे तो अल्लाह का सबसे बड़ा ईनाम मुसलमानों पर यही हुआ कि मेहर व मुहब्बत के इत्र और फूलों से पूरी दुनिया महक गयी। अल्लाह तआला अपने इस अज़ीम एहसान का कुरआन शरीफ़ में यूं तज़किरा फ़रमाते हैं, "अनुवादः और याद करो अल्लाह की नेमत को अपने ऊपर जब तुम एक दूसरे के दुश्मन थे, तो अल्लाह ही ने तुम्हारे दिलों में उल्फ़त पैदा कर दी तो तुम आपस में भाई–भाई हो गये।"

लिहाज़ा जब भी मुसलमानों के दिल से उसकी रोशन और ताबनाक इतिहास के नक़्श मिट जाएगें, और मुसलमान अल्लाह की अता की हुई अमन व अमान और सुकून व इत्मिनान की क़ीमत से ग़ाफ़िल होगा तो वो इज़्ज़त व सरबुलन्दी, कामयाबी व फ़िरोज़मन्दी, मुहब्बत व उल्फ़त और ईमान व यक़ीन के चश्मे से आबे हयात लेकर अपनी ज़िन्दगी की खेती को सैराब करना छोड़ देगा और दुनिया की कुछ दिनों की ऐश और बेक़ीमत सामान से लज़्ज़त याबी व लुत्फ़अन्दोज़ी का ख़्याल सामने हो जाएगा उसके नतीजे में मुश्किलें, मलाल और बदबख़्ती के पन्जे में गिरफ़्तार हो और खुदगर्ज़ी व मफ़ाद परस्ती के मोहलिक मर्ज़ का शिकार होकर रहेगा। उसकी दुनिया बस अपने में ही घिर कर रह जाएगी। अपनी जमाअत, अपनी औलाद, अपना ख़ानदान या अपनी जमाअत और अपनी पार्टी से आगे वो नहीं बढ़ सकता है। और इस तरह ऐसा मुसलमान इस्लामी समाज के हक़ में एक बदनुमा दाग़ और इसके रोशन माथे पर एक कलंक का टीका माना जाएगा। फिर नतीजा ये होता है कि ऐसा मुसलमान सरो पर मंडलाते हुए फ़साद और बेचैनी जो शर व फ़साद की गरमबाज़ारी और इन्सानी जान व माल व खून के व्यर्थ बहने की तरफ़ से अपनी आंखे बन्द करके साफ़ ऐसी चीज़ों में अपनी सभी सलाहियत व सारा ध्यान केन्द्रित करने लगता है जिनसे इसका अपना ज़ाती थोड़ा सा भी लाभ जुड़ा हुआ है। और इसकी क़दर व मन्ज़िलत में इज़ाफ़े की संभावना पायी जाती हो। यक़ीनन ऐसा मुसलमान खुदगर्ज़ी व लाभ परस्ती का ऐसा नमूना है जिसकी शर्म से इन्सानियत का माथा पसीने से लथपथ हो जाता है।

हैरत तो ये है कि ये नाम व निहाद मुसलमान बहुत जल्द इन सभी तख़रीब पसन्द तहरीकों और वर्गों में बुलन्द मुक़ाम और कुबूल आम हासिल कर लेता है। जो इसी तरीक़े के तख़रीबी अनासिर की तलाश में हर वक़्त घूमता रहता है। और जब भी उनको व्यक्तिगत या सामूहिक रूप में इस्लामी उसूल व नियमों के ख़िलाफ़ कोई तख़रीब करने वाला मिल जाता है तो वो फ़ौरन उसे बड़ी से बड़ी क़ीमत देकर ख़रीदने और उसको हासिल करने के लिये तैयार हो जाते हैं।

इससे ज़्यादा अफ़सोस की बात तो ये हे कि आजकल मुसलमानों में बहुत से ऐसे लोग पाये जाते हैं जिन्होने दुनिया के बदबख़्त और कोर बातिनों से चन्द कौड़ियों पर अपने ज़मीर का सौदा कर लिया। उस पर सितम ये कि उनके रिकाब में चलने और उनके हुक्म के सामने इन्तिहाई आजिज़ी व दर्मान्दगी के साथ सर के ऊंचा हो जाने को अपने लिये गर्व की बात समझते हैं। ऐसे मुसलमानों से वो काम लिया जाता है जिसमे सही ख़्याल के मुसलमानों के बीच बेचैनी की कैफ़ियत पैदा हो जाए और वो खुद अपनी ज़ात और अपने मसलों में उलझ जांए, ताकि उनको दुनिया के शासन के बारे में और अपने दीनी कामों व शरीअत के हुक्मों, अख़लाक़ी व समाजी मामलों और अमली व दावती प्रोग्राम के संबंध से सोचने का मौक़ा ही न मिले।

जब हालत ये है तो मुसलमान क्यों नहीं इन्तिहाई पस्ती और ज़िल्लत का शिकार होगा। आख़िर क्यों उसकी अस्मत व आबरू और उसके खून को ग़ैर मामूली और क़ीमती समझा जाए। वो तो इसी लायक़ है कि ग़लत व गुमहार कुन कामों व नज़रियों और सभ्यता व संस्कृति के लीडरों की हक़ीर ख़्वाहिशों का निशाना और तख़रीब कारी का यन्त्र बने।

आज अल्लाह से मुसलमानों का रिश्ता कमज़ोर पड़ गया। अल्लाह की मज़बूत रस्सी उनके हाथों से ढ़ीली पड़ गयी, जिसका नतीजा ये है कि वो एकता, ईमान व अक़ीदे और इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ के केन्द्र से दूर हो गये। आज मुसलमानों ने अल्लाह के इस हुक्म को भुला दिया कि, "ऐ मुसलमानों! अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थामे रहो," इसके नतीजे में उनका शिराज़ा बिखरा जा रहा है। एकता तार–तार हो रही है। और वो उन सभी अप्राकृतिक हालतों में पड़ते चले जा रहे हैं जिनसे छुटकारा पाना और पुरानी महानता को वापस लाना इसके लिये मुमकिन नहीं कि अल्लाह की रस्सी को वो मज़बूती से थाम ले। और ईमान व अक़ीदे के झन्डे तले एक बार फिर सब जमा हो जांए।

हज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़ि० को हुज़ूर स०अ० की नसीहतें

तबक़ात में लिखा है कि जब ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़हरा रज़ि0 का निकाह हुआ और उनकी रूख़सती हुई तो सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद स0अ0 ने उनको कुछ नसीहतें फ़रमायीं।

1. ऐ बेटी! अली रज़ि0 के यहां दाख़िल होते ही "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" पढ़ना।
2. हमेशा पाक व साफ़ सुथरे कपड़े पहनना।
3. आखों में सुरमा लगाना।
4. हर बात में सफ़ाई और सलीक़ा मन्दी का लिहाज़ रहे।
5. अली रज़ि0 की फ़रमाबरदारी और ताबेदारी करना।
6. हमेशा ख़ुशबू का इस्तेमाल करना।
7. घर को साफ़ सुथरा रखना।
8. एक दूसरे के हमदर्द बनकर रहना।
9. अली रज़ि0 के तमाम हक़ूक़ का ख़्याल रखना।
10. तुम्हारे ज़िम्मे घर के काम काज की ज़िम्मेदारी है और अली के ज़िम्मे घर के बाहर की ज़िम्मेदारी।

नबी पाक स0अ0 ने एक दूसरे मौक़े पर इरशाद फ़रमाया:

ऐ मुसलमानो! तुमको याद दिलाता हूं कि जब मैंने अपनी बेटी रुक़ैया और उम्मे कुलसूम की शादी उस्मान बिन अफ़्फ़ान रज़ि0 से की तो मैंने अपनी बेटियों को नसीहतन कहा था:

बेटियों! तुम्हारे ऊपर घर का इन्तिज़ाम और उसकी निगरानी, घर की सफ़ाई और सुथराई, और इसी तरह घरेलू सभी काम–काज, पति को खुश रखना, उसका कहना मानना, उसको राहत व आराम पहुंचाना, इसी तरह औलाद की तरबियत फ़र्ज़ है। इन कामों को फ़र्ज़ समझकर ही करना और उस्मान रज़ि0 का फ़र्ज़ ये है कि मेहनत और कोशिश से रोज़ी कमाकर लायें और औलाद के लिये तालीम का इन्तिज़ाम करें और अपने बच्चों का सदक़ा अदा करें।

महमूदुल अज़हार नदवी

हमारा ये दस्तूर नहीं

उस्मानिया ख़िलाफ़त (1288–1924 का सूरज अपने उरूज पर है, इसके दसियों सुल्तान सुलेमान आज़म क़ानूनी (1495–1566) की हुकूमत का दौर है। 1520–1560 न केवल उस्मानिया के सुल्तानों बल्कि दुनिया के इतिहास का एक निहायत अहम दौर गिना जाता है। इस समय ज़मीन पर उससे बड़ा कोई ताजदार नहीं था सोलहवीं सदी में तुर्कों की अज़ीमुश्शान कामयाबियां उसकी ज़बरदस्त फ़ौजी ताक़त और अज़मत की महरून है। उसने बिलग्रेड को 1521 में फ़तेह किया। रूड्स को 1522 में फ़तेह किया, हंगरी को 1526 में फ़तेह किया, वो बूडा दक्षिणी अफ़्रीक़ा और दूसरे शहरों का भी विजयी था। उसकी सलतनत बूडा से बसरा तक और बहरे कास्पेन से बहरे रूम के पश्चिमी हिस्सों तक फैली हुई थी। इसकी सलतनत में यूरोप, एशिया, अफ़्रीक़ा के बहुत से देश शामिल थे। उसका प्रभाव हिन्दुस्तान में भी था और बहरे अहमर पर तो उसका अधिपत्य था। वो कहा करता था कि वो बहुत से देशों का फ़रमान रवा है। तीन बराज़मों का सुलतान है। और वो बहरों का मालिक है)

सुल्तान को पुरकशिश मस्जिद की तामीर कराने की फिक्र होती है और उसने अयाने सलतनत को इस्तामबुल की सबसे खुशनुमा जगह के चुनाव की ज़िम्मेदारी दी। हिदायत के मुताबिक़ सुल्तान के कारिन्दे मस्जिद की जगह के तलाश और चुनाव के लिये के लिये फैल चुके हैं। और आख़िर में उन्होने इस्तामबुल की एक जगह का चुनाव कर ही लिया।

वो जगह बहुत ही दिलफ़रेब और खुशनुमा है, मगर उसमें एक पेचीदगी है, जिसका हल न सुल्तान के पास है और न हुकूमत के ज़िम्मेदारों के पास है। वो पेचीदगी ये है कि उसके बीच में एक झोपड़ी है जिसका मालिक उसे छोड़ने के लिये तैयार नहीं और उसके निर्माण शुरू करने से पहले उस झोपड़ी का हटना ज़रूरी है। सुल्तान के कारिन्दे जाकर यहूदी का दरवाज़ा खटखटाते हैं, यहूदी हाज़िर होता है और कहता है..... ख़ैर तो है..... क्या मामला है। जवाब दिया जाता है कि हम सुल्तान के कारिन्दे हैं। और सुल्तान के आदेश पर हम लोग हम लोग एक मस्जिद की तामीर के लिये मुनासिब जगह के तलाश पर मामूर हैं। यहूदी ने जवाब दिया, मेरा इस विषय से कोई संबंध नहीं है, मैं तैयार नहीं हूं, सुल्तान के कारिन्दे कहते हैं कि इस जगह को मस्जिद की तामीर के लिये चुना गया है इसके बीच में तुम्हारी झोपड़ी है और उसके होते हुए इसकी तामीर नामुमकिन है। यहूदी सवाल करता है, क्या तुम लोग मेरी झोपड़ी गिरा दोगे?कारिन्दों ने जवाब दिया हम इसको ख़रीदेंगे, तुम इसकी कितनी क़ीमत लोगे?यहूदीः बिल्कुल नहीं..... बेचने का मेरा कोई इरादा नहीं है।

कारिन्देः हम तुमको इतना मुआवज़ा देगें कि तुम इससे कहीं बेहतर घर ख़रीद सकते हो।

यहूदीः बिल्कुल नहीं.... बिल्कुल नहीं..... मुझको मेरी झोपड़ी प्यारी है। ये सही है कि वो एक छोटी झोपड़ी है, मगर वहां का मन्ज़र बहुत अच्छा है, वहां से खाड़ी के पानी को हम देख सकते हैं।

कारिन्देः हम तुमको दोगुनी क़ीमत देंगे।

यहूदीः बिल्कुल नहीं मेरा बेचने का कोई इरादा नहीं वो मेरे काम करने की जगह से क़रीब है।

कोई बात इस यहूदी पर असर नहीं कर रही थी सब कारिन्दे सुल्तान के पास वापस गये। और पूरी हालत बतायी और कहाः

सुल्तान जिस इलाक़े को हम ने जामा मस्जिद के लिये चुना था वो हम लोगों को बहुत पसन्द है लेकिन इसके बीच में एक यहूदी की झोपड़ी है, हम लोगो ने ख़रीदने की बहुत कोशिश की और बड़ी रक़म की भी पेशकश की, मगर वो इसके राज़ी न हुआ, अगर आप हुक्म दें तो ज़ब्त कर ली जाये, और झोपड़ी गिरा दी जाए, सुल्तान ने न में सर हिलाया और कहाः हरगिज़ नहीं, ये दस्तूर नहीं है और हमारा धर्म न किसी पर ज़ुल्म की इजाज़त देता है और न किसी को डराने और धमकाने की इजाज़त देता है, हमको इसका दूसरा हल ढूंढ़ना होगा और इस तरह मस्जिद की तामीर रूक गयी।

और आख़िर में सुल्तान ने ये फ़ैसला किया कि वो इस मामले में शेख़ुल इस्लाम से मशविरा करे। शेख़ुल इस्लाम ने जवाब दिया कि इस्लाम का हुक्म साफ़ है। न बेचने की वजह हम उसको कोई सज़ा नहीं दे सकते। वो झोपड़ी उसकी जागीर है और उसको जबरन नहीं लिया जा सकता है। इसके मरने के बाद इसके बेटे चाहें न बेंचे क्यों कि क़ानून माल व दौलत को बेटे को मुन्तिक़ल करने के हक़ को तस्लीम करता है। और मुख़्तसर ये कि आपके सामने केवल एक ही सबील है कि आप किस तरह से यहूद को राज़ी कर लें।

सुल्तान ने थोड़ी देर सोचा फिर अयाने सलतनत से कहा मैं खुद उसके पास जाऊंगा और उससे बेचने को कहूंगा। और ऐसा ही हुआ। सुल्तान खुद यहूदी के पास गया और दरवाज़ा खटखटाया, यहूदी निकला वो देखता है कि उसके सामने सुल्तान है और हुकूमत के कुछ कारिन्दे और वो शशदर हो गया। (शेषः पेज 20 पर)

कामयाब ज़िन्दगी का राज़

जाफ़र मसऊद हसनी नदवी

एक साहब किसी बात पर अपनी बीवी से नाराज़ हो गये और इतना नाराज़ हुए कि धमकी दे डाली और धमकी भी ये कि मैं तुम्हे खुशियों से महरूम कर दूंगा। बीवी अपने शौहर से कुछ अलग थी साहबे ईमान तो शौहर नामुराद भी थे। लेकिन बीवी का ईमान क़ाबिले रश्क़ था। उसके चेहरे पर यक़ीन का नूर भी था और आंखों में इश्क़ का सुरूर भी। बहुत ही इत्मिनान से जवाब दिया कि मेरी खुशियां आप छीन ही नही सकते। शौहर ने हैरत से पूछा! वो कैसे?बीवी ने कहा! अगर मेरी खुशी माल होती तो यक़ीनन आप मुझको माल से महरूम कर सकते थे, मेरी खुशी अगर ज़ेवरात में होती तो यक़ीनन आप अपने दिये हुए ज़ेवर मुझसे वापस ले सकते थे, मेरी खुशी अगर क़ीमती कपड़ों में होती तो यक़ीनन आप मुझको उन कपड़ों के इस्तेमाल से रोक सकते थे, लेकिन खुदा का शुक्र है कि मेरी खुशी न माल में है, न कपड़े मे है, न ज़ेवरात में बल्कि मेरी खुशी मेरे ईमान में है और मेरा ईमान मेरे दिल में है और मेरा दिल ..... तो उसका मालिक सिर्फ़ और सिर्फ़ खुदा है।

बहुत से लोग ये समझते हैं कि खुशी का संबंध माल की ज़्यादती से है, ऊंची–ऊंची इमारतों में है, दौलत की फ़रावानी से है, लम्बी चौड़ी तन्ख़्वाहों से है, इशारे के इन्तिज़ार में खड़े ख़ादिमों और ख़ादिमाओं से है, क़ीमती कारों में घूमने और हवाई जहाज़ों में उड़ने से है और बच्चों को ऊंची तालीम दिलाने और उनकी दुनिया संवारने से है।

उनका ख़्याल है कि खुशी हासिल होती है बच्चों और बच्चियों से, ख़्वाहिशों के पूरे हो जाने से, कारोबार की तरक़्क़ी से, ख़ानदान बड़ा होने से, नफ़्स के तक़ाज़ों के पूरा हो जाने से, और दुनिया की नेमतों से लुत्फ़ उठाने से, लेकिन क्या ये सच है? आइये देखें खुदा की किताब इस सिलसिले में हमारी क्या रहनुमाई करती है। सूरह आले इमरान की आयत नम्बर 14 का का तरजुमा देखिये:

(अनुवादः इन्सान मज़े लेने की लत में रीझ गये हैं, औरतें और बेटे, जोड़ कर रखा हुआ माल, सोने और चांदी के ढ़ेर, चुने हुए घोड़े उन्हे बहुत पसंद है, इसी तरह मवेशी और खेतियां भी, ये इस पार की ज़िन्दगी के हक़ीर सामान हैं, और अल्लाह के पास पलट कर जाने पर उससे भी बेहतर सामान और खूबसूरत जगह है।)

खुशी या खुश रहने का संबध बाहर की दुनिया से नहीं इन्सान की अन्दर की दुनिया से है। "खुश रहना एक ऐसा सायेदार पेड़ है जिसकी जड़े दिल में पेवस्त हैं। ईमान से ये जड़े सैराब होती हैं, अमल से उन जड़ों को खाद मिलती हैं, और तक़्वे से उन जड़ों को ग़िज़ा हासिल होती है और ईमान वो सदाबहार बाग़ीचा है जिसके घने पेड़ों, रंग–बिरंगे फूलों और उन फूलों की महकती खुशबुओं में इन्सान अपना सारा दुख–दर्द, और ज़िन्दगी की सारी तकलीफ़ें भूल जाता है।" वहां न उसे रिज़्क़ की तंगी परेशान करती है, न लोगों की बदसुलूकी दिल दुखाती है, न महरूमी का एहसास रंजीदा करता है। रज़ामंदी के जज़्बे से उसका दिल ऐसा भरा रहता है कि नाशुक्री का वहां गुज़र भी नहीं होता। तो फिर किस बात का ग़म?और क्योंकर अफ़सोस?

मिस्र के मशहूर अदीब व लेखक अहमद अमीन की बात भी सुनते चलिये, वो कहते हैं: "ज़िन्दगी के तर्जुबों से पूरी तरह ये बात साबित हो जाती है कि सच्ची खुशी खुदा पर ईमान लाने और उसके हुक्मों के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने में है। अगर खुशियां चाहिये तो खुदा से अपने रिश्ते को मज़बूत करना होगा। घरों में बिखराव, ख़ानदानों में फूट और अहले खाना में नाकामी व नामुरादी का एहसास बल्कि उनकी बदबख़्ती की सबसे बड़ी वजह जवान बेटे और बेटियां हैं जिनके दिल खुदा के डर से ख़ाली हैं, जिनका तौर–तरीक़ा शरीअत से सरासर उलटा है, जिनको न खुदा का लिहाज़ है, न शरीअत का पास, वो केवल लज़्ज़तों से आश्ना, ख़्वाहिशों के असीर और आदतों के गुलाम हैं। एक खुदा की गुलामी से जब इन्सान निकलता है तो हर किसी की गुलामी करने पर मजबूर होता है और उसका सर हर चौखट पर झुकता है। अगर किसी ख़ानदान में दीनी शिक्षा आम हो तो उस ख़ानदान पर खुशियों और नेकियों की बारिश हो और आज़ादी का उसको मज़ा आये।"

ठीक तौर पर ये कहा जा सकता है कि दिल का सुकून व क़रार ही सबसे बड़ी खुशी है। और दिल का ये इत्मिनान बक़ौल अल्लामा यूसुफ़ अलक़रज़ावी खुदा का तोहफ़ा है। ये वो नूर है जहां सुकून मिलता है डरे और सहमे हुए इन्सान को, जहां क़रार आता है बेचैन तबीअत को, जहां तसल्ली मिलती है ग़मज़दा और टूटे हुए दिल को, और ये सुकून व क़रार अपनी पूरी आब व ताब के साथ हमें नज़र आता है। हुज़ूर पास स0अ0 के ताएफ़ के सफ़र में, ज़रा सोचिये क़दम मुबारक लहूलुहान हैं पत्थरों की चोट से, क़ल्बे अतहर ज़ख़्मी है कुफ़्फ़ार की इस्लाम दुश्मनी से लेकिन फिर भी नबी की ज़बान है कि कह रही है: "ऐ अल्लाह अगर तू मुझसे नाराज़ नही तो मुझे किसी की परवाह नहीं, ऐ खुदा मैं पनाह मांगता हूं तेरे ग़ज़ब से, पनाह मांगता हूं तेरी नाराज़गी से, मुझे सिर्फ़ और सिर्फ़ तेरी रज़ा चाहिये।"

हज़रत साद बिन वक़ास रज़ि अल्लाहु अन्हू ने अपने बेटे को नसीहत करते हुए कहा था, ऐ बेटे! अगर मालदारी चाहते हो तो सब्र के ज़रिये इसको हासिल करो। क़नाअत ही एक ऐसा वाहिद रास्ता है जो इन्सानों के अन्दर बेनियाज़ी की सिफ़त पैदा करता है, ये वो फ़क़ीराना लिबास है कि जब जिस्म पर चढ़ता है तो दिल शाह बन जाता है।

ज़रा सोचिये, एक मामूली सा मकान है, बादशाह सलामत तशरीफ़ लाते हैं, बोरिया नशीन अल्लाह का एक बन्दा शहाब हल्बी पांव फैलाए बैठा है। ख़ादिम व मुरीदैन की जमाअत इस मेहमान के आने पर खुशी से भरे हुए हैं, लेकिन खुदा का ये बन्दा बिल्कुल ख़ामोश है, हाव भाव में कोई तब्दीली नहीं, चेहरे पर कोई असर नहीं, बादशाह के आने पर खुशी का कोई इज़हार नहीं, स्वागत की तैयारियों से इसे कोई दिलचस्पी नहीं, दिल में इसके सुकून है, चेहरे पर इसके जलाल है, आवाज़ में इसके भरोसा है, लहजे में इसके यक़ीन है, आंखों में ऐसी चमक है कि मिलने वालों के दिल की अंधेरी दुनिया में रोशनी होने लगती है, आवाज़ में ऐसा असर है कि सुनने वालों की दिल की गहराई में उतरने लगती है। बादशाह की सवारी पहुंचती है, अशरफ़ियों की थैली नज़राने के तौर पर इस खुदा के बन्दे की ख़िदमत में पेश की जाती है, जवाब ऐसा मिलता है कि बादशाह की हक़ीक़त खुद बादशाह पर ज़ाहिर होने लगती है। वो जवाब क्या था एक आइना था जो बादशाह को दिखाया गया। एक सच था जो बादशाह के सामने पहली बार बोला गया। उन्होने कहाः "बादशाह के सामने पांव फैलाने की जुर्रत करने वाला बादशाह के सामने हाथ फैलाने की ग़लती नहीं करता।"

इन्ही बुज़ुर्गों की नुमाइन्दगी करने वाले एक बोरिया नशीन खुदा के बन्दे को हमने देखा भी है, और बहुत क़रीब से देखा है और ऐसे मौक़े पर देखा है जहां फ़क़ीरी का इम्तिहान होता है। जहां बनावटी फ़क़ीरी का भेद खुल जाता है और सच्ची फ़क़ीरी का शाहाना अन्दाज़ सामने आता है। इसके फ़क़ीराना ठिकाने पर देश के बहुत से शासको के आने का मन्ज़र आज भी उसी तरह निगाहों के सामने है। उनमें से किसी एक की आमद थी, एक हंगामा सा बरपा था। एक शोर सा मचा हुआ था। एक भीड़ थी जो जमा थी। हर शख़्स अन्दर घुसने के लिये बेक़रार था। बड़े–बड़े घाघ थे, खुशामद कर रहे थे। वास्ते दे रहे थे, ख़ाक़ी वरदी वालों के आगे पीछे हो रहे थे। लेकिन सुकून में था तो केवल वो फ़क़ीर। कोई ज़िक्र नहीं था उसकी मजलिस में किसी की आमद का। कोई तैयारी नहीं थी उसके यहां किसी के स्वागत की। लगता ही नहीं था कि कोई आने वाला है। वही लेखन की व्यस्तता। वही ज्ञान की बातें। वहीं इस्लाह व दावत का विषय। नियमो की वही पाबन्दी। यहां तक कि वो आ पहुंचा है जिसके लिये लोगों के दिल धड़क रहे थे। निगाहें राह में बिछी हुई थीं और नज़रे दीदार के लिये बेताब। वो आता है और चला जाता है फ़क़ीर को कुछ देकर नहीं फ़क़ीर से कुछ लेकर। एक पैग़ाम लेकर इन्सानियत का। देश की सेवा का। जनता के साथ न्याय करने का।

शासको को पैग़ाम देने की ये जुर्रत इसके अन्दर कहां से आयी?उनकी आंखों में आंखे डालकर बात करने की ये ताक़त इसमें कैसे पैदा हुई? आप भी अनुभव करके देख लीजिए, सब्र का और तक़वे का। यही वो फ़क़ीराना पोशाक है जो फ़क़ीरों को शाहों से ऊंचा मुक़ाम अता करती है। मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह0 की ज़िन्दगी में ये तीनों पहलू बहुत नुमायां नज़र आते हैं। शाह फ़ैसल; ऐवार्ड, दुबई ऐवार्ड, ब्रुनई इन्टरनेशनल ऐवार्ड हासिल करने वाले इस फ़क़ीर के लिये उसकी फ़क़ीराना ज़िन्दगी, फ़क़ीराना लिबास, फ़क़ीराना मकान, और फ़क़ीराना दस्तरख़्वान, ने ये आसान कर दिया था कि इन ऐवार्डों को असर उनकी ज़ात पर नहीं। अपने इरादा की आसाइश और आराइश पर नहीं बल्कि उन कामों पर ख़र्च करे जिसका फ़ाएदा उम्मते मुस्लिमा को पहुंचे।

तिबरी का बयान क्या हुआ ये वाक़्या भी हमारी आंखे खोलने के लिये काफ़ी है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने अपने ख़िलाफ़त के दौर में एक शख़्स को हुक्म दिया कि वो उनके लिये आठ दिरहम की क़ीमत का एक सस्ता सा जोड़ा ख़रीद लाये। उसने जोड़ा ख़रीदा और लेकर उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कपड़े को हाथ में लेते हुए कहा, कितना मुलायम है, लाने वाला मुस्कराया। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने मुस्कराने की वजह पूछी तो उस शख़्स ने जवाब दिया, आपने ख़िलाफ़त का पद संभालने से पहले भी मुझसे एक जोड़ा मंगवाया था और मैंने आपका ज़ौक मेयार और पसंद देखते हुए रेशम का एक जोड़ा हज़ार दिरहम में ख़रीदा था। और आपने इस कपड़े पर हाथ रखते ही ये कहा था! बड़ा खुरदुरा है। लेकिन आज आप इस मामूली कपड़े की तारीफ़ कर रहे हैं। जिसकी क़ीमत केवल आठ दिरहम है। और वो वाक़्यी मोटा और खुरदुरा है। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने जवाब दिया! मैं बेहतर से बेहतर की तलाश में रहता हूं। एक मक़ाम जब मुझे हासिल हो जाता तो उससे बुलन्द मक़ाम हासिल करने की कोशिश करता हूं। मुझे अमीर बनाया गया तो ख़लीफ़ा बनने का शौक़ हुआ, ख़िलाफ़त का ओहदा मिला तो जन्नत का ख़्याल दिल में आया और मेरे अन्दर ये बदलाव इसी ख़्याल का नतीजा है। दुआ करो ये ख़्याल मज़बूत से मज़बूत होता जाए।

(शेषः पेज 14 पर)

जनाब शेख़ नूरी

आलम–ए–बरज़ख़

इन्सानी ज़िन्दगी का रिश्ता किसी भी हाल में नहीं टूटेगा। यह जिस तरह मां के रहम (गर्भ) में सांस लेता रहा है और जिस तरह इस दुनिया आबो–गिल (मिट्टी–पानी) में ज़िन्दगी गुज़ारी है उसी तरह आलमे बरज़ख़ में ज़िन्दगी के मज़े लेता रहेगा। यहां तक कि हश्र के मैदान में लाया जाएगा और हिसाब–किताब के बाद अपनी ज़िन्दगी के आख़िरी मरहले (चरण) में क़दम रखेगा जो या तो अंधेरे और अज़ाब की सूरत में सामने आयेगी या नूर और रहमत की रोशनी से भरी हुई।

मौत के बाद क़ियामत जब आयेगी इस बीच की मुद्दत को आलमे बरज़ख़ (बरज़ख़ की दुनिया) कहते हैं। यह एक ऐसी दुनिया है जहां इन्सानी ज़िन्दगी की कैफ़ियत यानि नेमत सहूलत या सख़्ती और अज़ाब की दुनियावी ज़िन्दगी में अंजाम दिये गये कर्मों से जुड़े होते हैं। यह बात हमेशा याद रखनी चाहिये कि आलमे बरज़ख़ की गिनती उन आस्थाओं में होती है जो इस्लाम में पूरे तौर से साबित हैं।

इस्लामी आस्था के अनुसार हमें क़ब्र के सवालात के बारे में ईमान और यक़ीन रखना चाहिये और ये भी अक़ीदा रखना ज़रूरी है कि क़ब्र के सवाल की मंज़िल से गुज़रने के बाद इन्सान आलमे बरज़ख़ में मुंतक़िल कर दिये जाते हैं और आमाल और अक़ीदे के एतबार से नेक होने की सूरत में उनकी ज़िन्दगी परवरदिगारे आलम की नेमतों में बसर होती है। और उन लोगों से जो उनकी क़ब्रों की ज़ियारत के लिये आते हैं उन्हें लगाव पैदा हो जाता है और ये उनको देखकर ख़ुश होते हैं और अगर आमाल और अक़ीदे के लिहाज़ से ज़िन्दगी गुनाह में गुज़री है तो अल्लाह के अज़ाब में डाल दिये जाते हैं।

हकीम रब्बानी अब्दुर्रहमान लाहीजी अपनी किताब "गौहरे मुराद" में महाद के शीर्षक से क़ायम एक बहस के बारे में आलमे बरज़ख़ के विषय पर बातचीत करते हुए लिखते हैं–

"बहुत सारी रिवायत में इस बात की ताकीद मिलती है कि मरने के बाद ईमान वालों की रूहें अल्लाह की नेमतों से फ़ायदा उठाती हैं और ग़ैर ईमान वालों की रूहें अल्लाह के अज़ाब का मज़ा चखती होंगी और ये सूरतेहाल क़यामत के दिन तक यूं ही बाक़ी रहेगी। " इसके बाद इसके बारे में रिवायते नकल की हैं:

आलमे बरज़ख़ के बारे में इस जगह अहले बैत (रज़ि0) से कुछ हदीसें नक़ल की हैं ताकि सही तस्वीर सामने आ सके।

आमाल का मुजस्सम होना

अमीरूल मोमीनीन हज़रत अली रज़ि0 फ़रमाते हैं: "दुनियावी ज़िन्दगी के आख़िरी और उख़रवी ज़िन्दगी के पहले रोज़ सारे इन्सानों के सामने उनके माल औलाद और आमाल जिस्म की शक्ल लेकर सामने आ जाते हैं और वो पहले माल की तरह ध्यान देता है और उससे कहता है, मैंने तुझे पाने के लिये बहुत लालच और हवस से काम लिया, अब तू मेरे लिये क्या कर सकता है?जवाब मिलता है अपना कफ़न मुझसे हासिल कर ले।"

इसके बाद औलाद की तरफ़ रूख़ करता है और उससे सवाल करता है: मैं हमेशा तुम्हारा दोस्त रहा हूं और तुम्हारी मुहब्बत और मदद में जान की बाज़ी लगायी है आज तुम मेरे लिये कौन सा काम अंजाम दोगे? वो जवाब में कहते हैं, हम तुमको क़ब्र तक पहुंचा देंगे और क़ब्र में दबा देंगे। आख़िर में वो अपने आमाल की तरफ़ ध्यान देताहै और कहता है: अल्लाह की क़सम मैने कभी तुझे अहमियत नहीं, तेरा वजूद हमेशा मेरे लिये सख़्त रहा, आज तुझसे क्या मेरा कोई काम बन सकता है?क़ब्र की मंज़िल से लेकर हर जगह हर हाल में तेरे साथ हूं और जिस रोज़ तुझको तेरे परवरदिगार के सामने पेश किया जाएगा उस दिन भी तेरे साथ रहूंगा। इसके बाद हज़रत फ़रमाते हैं: अगर वो शख़्स अल्लाह के दोस्तों में से हुआ तो एक शक्ल बेहद बेहतरीन और पाकीज़ा और ख़ुशबू में बसी हुई एक नेक चेहरे और अच्छी पोशाक में लिपटी हुई उस घड़ी उसके क़रीब आती है और उससे कहती है: मैं राहत और आराम की ख़ुशख़बरी देते हुए नेमतों से भरी हुई जन्नत के लिये तुझे स्वागतम कहता हूं। यह शख़्स पूछता है: तू कौन है?मेरा इतना दिल मोहने वाला और सुकून पहुंचाने वाला बन गया है?वो कहता है मैं तेरा नेक अमल हूं।

इसके बाद मरने वाला गुस्ल देने वालों को पहचान लेता है और जनाज़े को कंधा देने वालों को कहता है, "जल्दी करो,

मुझे जल्द से जल्द आख़िरी मंज़िल की तरफ़ पहुंचा दो।"

और जब उसको क़ब्र में रखते हैं तो दो फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से वहां पहुंचते हैं और उससे तौहीद (अल्लाह एक है) दीन, शरीअत, नुबूवत और दूसरी इस्लामी बातों के बारे में सवाल करते हैं और उनको सही और ठीक जवाब मिल जाता है। तो वे फ़रिश्ते उस शख़्स से कहते हैं कि अल्लाह तुमको उस राह पर साबित क़दम रखे जो उसको पसन्द है और जिसमें उसकी खुशनूदी और रज़ा शामिल है। इसके बाद उसकी क़ब्र में विस्तार पैदा कर देते हैं, और उसके सामने जन्नत का एक झरोखा खोलकर आवाज देते हैं: "तेरी आंखे ठन्डी रहें, अब इत्मिनान भरे दिल के साथ अल्लाह की रहमतों की छांव में आराम कर क्योंकि अल्लाह ने फ़रमाया है": "यानि जन्नत वाले उस रोज़ बेहतर से बेहतर रिहाइश की जगह अच्छी से अच्छी आरामगाह के मालिक होंगे" (सूरह अलफुरक़ानः 24)

और अगर वो शख़्स अल्लाह का दुश्मन हुआ तो एक निहायत ही गन्दी, बदबूदार, और नापाक सूरत उसके क़रीब आती है और कहती है, "मैं तुझको दर्दनाक सख़्ती, और अज़ाब की ख़बर देती हूं। अतः वो शख़्स भी गुस्ल देने वालों, जनाज़ा उठाने वालों को पहचानता है, और उनसे कहता है कि इस जनाज़े को धीरे–धीरे ले चलें, और जब उसको क़ब्र में दाख़िल करते हैं तो दो फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से पहुंचते हैं, और उससे अल्लाह, दीन और पैग़म्बर के बारे में सवाल करते हैं, और वो सही जवाब नहीं दे पाता, इसके बाद सख़्ती और अज़ाब उसको अपने घेरे में ले लेते हैं और उसके सामने एक आग का दर खोल देते हैं और उससे कहते हैं: "अब तू है और ये अज़ाब और सख़्तियां।" और वो उसी तरह अज़ाब में गिरफ़्तार रहता है और क़ियामत जल्दी आने की आरज़ू किया करता है।

मोमीनीन की रूहों का इकट्ठा होना

हब्बा–ए–उरनी नाम का एक शख़्स कहता है: एक रोज़ अमीरुल मोमीनीन हज़रत अली रज़ि0 के साथ कूफ़ा शहर से बाहर आया, जब हम लोग उस जगह पहुंचे जिसको "वादियुस्सलाम" कहते हैं तो हज़रत अली (रज़ि0) ठहरे और जैसे अलग–अलग गिरोहों से बातचीत कर रहे हों, देर तक खड़े रहे। मैं भी खड़ा रहा और फिर थक कर बैठ गया और जब बैठे–बैठे भी थकान महसूस होने लगी तो खड़ा हो गया, दोबारा थक कर बैठा फिर उठा और अपनी अबा जो मैंने ज़मीन पर बिछा रखी थी उठाते हुए आवाज़ दीः या अमीरूल मोमीनीन कितनी देर हो गयी आप इस तरह खड़े हुए हैं, कुछ देर आराम फ़रमांए और अपनी अबा ज़मीन पर बिछा दी कि हज़रत अली रज़ि0 उस पर बैठ जांए।

हज़रत अली रज़ि0 ने जवाब में फ़रमायाः ऐ हब्बा! मैं मोमीनीन से बातें कर रहा हूं और उनसे उनसियत पैदा कर रहा हूं। हब्बा कहते हैं मुझे कुछ भी नज़र नहीं आया इसलिये मैंने तअज्जुब के साथ अर्ज़ कियाः या अमीरूल मोमीनीन क्या आपका मतलब है कि मुर्दों के साथ बात की जा सकती है और उनसे मानूस हुआ जा सकता है?आपने फ़रमायाः हां अगर तुम्हारे सामने से सारे पर्दे हटा दियें जांए और हक़ीक़त सामने कर दी जाए तो तुम देखोगे कि यहां मोमीनीन गिरोंहो की शक्ल में सफ़े बांधे आपस में बातें कर रहे हैं। मैंने कहाः जिस्म की शक्ल में रूह की शक्ल में? हज़रत अली रज़ि0 ने फ़रमायाः ये मोमीनीन की रूहें हैं इसके बाद आपने फ़रमायाः मोमीनीन में से कोई भी कहीं चाहे उसे ज़मीन के किसी भी भाग पर मौत आयी हो ऐसा नहीं है कि उसकी रूह तक ये हुक्म न पहुंचता हो कि "वादी उस्सलाम" में मोमीनीन की रूहों के साथ मिल जाए। वादी उस्सलाम जन्नत के टुकड़ों में से एक टुकड़ा है।

शेष : कामयाब ज़िन्दगी का राज़

चलते चलते एक वाक़्या सुनते जाइये! इबरत के लिये काफ़ी है, हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ आठ लड़के छोड़कर दुनिया से रूख़सत हुए। जब वो बिस्तर पर थे तो लोगों ने पूछा! आपने अपनी औलाद के लिये क्या छोड़ा? फ़रमाया! मैंने उनके लिये खुदा का डर छोड़ा, तक़वा छोड़ा, नेकी का रास्ता छोड़ा। अगर वो नेकी के रास्ते पर चलेंगे तो क़दम–क़दम पर खुदा का फ़ज़ल उनके साथ रहेगा और अरग वो बदी की राह अपनांएगे तो मैं नहीं चाहता कि मैं उनके लिये कोई ऐसी चीज़ छोड़ कर जाऊं जो गुनाहों में उनकी मदद करे। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ जब दुनिया से रूख़सत हुए तो उनके लड़कों के हिस्से में सिर्फ़ 12–12 दिरहम आये।

इसके उल्टे हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने अपने हर बेटे के लिये एक लाख दीनार छोड़े और बीस साल बाद दुनिया ने ये देखा कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के बेटे शानदार घोड़ों पर सवार हैं, और वो खुदा की राह में अपनी दौलत ख़र्च कर रहे हैं और हिशाम बिन अब्दुल मलिक के बेटे राजधानी की मस्जिद के दरवाज़े पर बिन कपड़ों के खड़े भीख मांग रहे हैं और सदके की रकम से अपनी ज़रूरत पूरी करने की कोशिश कर रहे हैं।

दीन-ए-इस्लाम में उस्ताद का अदब

मन्सूरुल हक़

रसूल–ए–करीम स0अ0 ने फ़रमाया कि मुझे इस जहान में उस्ताद बनाकर भेजा गया।

अल्लाह तआला ने कुरआन में (आप स0अ0 उनको किताब व हिकमत की तालीम देते हैं) कह कर हुज़ूर स0अ0 की हैसियत उस्ताद की बयान की है। खुद रसूलुल्लाह स0अ0 की ज़बान से ये बाते कही गयीं हैं: "मैं उस्ताद बनाकर भेजा गया हूं" इस्लामी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक को बहुत अधिक महत्व प्राप्त है शिक्षक की ज़ात ही शिक्षा से जुड़ी हुई है। नई नस्ल के भविष्य के निर्माण के सिलसिले में शिक्षक की मिसाल एक किसान और माली की सी है।

अल्लामा मुहम्मद इक़बाल रह0 के ये शब्द शिक्षक की महानता व महत्ता बढ़ाते हैं: "शिक्षक वास्तव में क़ौम के रक्षक हैं क्योंकि आने वाली नस्लों को संवारना और उनको देश की सेवा के योग्य बनाना उन्ही के ज़िम्मे है" सभी प्राणिवर्गों में सबसे श्रेष्ठ स्तर की मेहनत और काम में सबसे अधिक श्रेष्ठ स्तर का काम देश के शिक्षको का काम है। उस्ताद का फ़र्ज़ सब फ़र्ज़ों से ज़्यादा अहम और मुश्किल है क्योंकि हर तरह की अख़लाक़ी, सभ्यता की और मज़हबी नेकियों की कुन्जी उसी के हाथ में है और हर प्रकार की उन्नति का उदगम् उसकी मेहनत है।

हेनरी का कहना है, "शिक्षक ज्ञान की उन्नति का साधन है लेकिन उसके ज्ञान से लाभ वो नेक लोग उठाते हैं जिनके सीने अदब व एहतराम की नेमत से भरे हुए हों क्योंकि अदब एक पेड़ है और इल्म उसका फल। अगर पेड़ ही न हो तो फल कैसे लगेगा?"

अब इस्लामी क़ौम की क़दर के क़ाबिल, क़द्दावर और कुछ अहम लोगों की बातों का ज़िक्र किया जाता है जिन्होंने अपने उस्ताद के अदब व एहतराम की बेहतरीन मिसाल पेश की और जो हमको रास्ता भी दिखाती हैं।

चौथे ख़लीफ़ा अमीरुलमोमीनीन हज़रत सैय्यदना अली रज़ि0 ने फ़रमाया, "जिसने मुझे एक शब्द भी बताया मैं उसका गुलाम हूं, वो मुझे चाहे बेचे, आज़ाद करे, या गुलाम बनाये रखे एक दूसरे मौक़े पर फ़रमाते हैं कि "आलिम का हक़ ये है कि उसके आगे न बैठो और ज़रूरत पेश आने पर सबसे पहले उसकी ख़िदमत के लिये खड़े हो जाओ"

कुरआन की तफ़सीर करने वाले हज़रत सैय्यदना अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 मआरिफ़ कुरआन के लिये हज़रत उबई इब्ने कअब रज़ि0 के घर जाते तो उनके दरवाज़े पर दस्तक न देते बल्कि ख़ामोशी से उनका इन्तिज़ार करते यहां तक कि वो अपने नियमानुसार बाहर न आ जाते। हज़रत उबई बिन कअब रज़ि0 को ये बात बुरी लगी। एक दिन कहने लगे, "आपने दरवाज़ा क्यों न खटखटाया ताकि मैं बाहर आ जाता और आपको इन्तिज़ार की तकलीफ़ न उठानी पड़ती" आपने जवाब में कहा, "आलिम का अपनी क़ौम में मक़ाम ऐसा है जैसे नबी करीम स0अ0 का मक़ाम उम्मत में और बेशक अल्लाह तआला ने नबी करीम स0अ0 के अबद के बारे में फ़रमाया (ऐ नबी के दरवाज़े पर आवाज़ लगाने वालों) अगर तुम सब्र करते यहां तक कि मेरे रसूल स0अ0 बाहर तशरीफ़ लाते"

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 ने एक जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी। फिर उनकी सवारी के लिये खच्चर लाया गया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 ने आगे बढ़कर लगाम थाम ली। हज़रत ज़ैद रज़ि0 ये देखकर कहा, "इब्ने अम रसूलुल्लाह स0अ0! आप हट जांए, इस पर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 ने जवाब दिया: "उलमा और अकाबिर की इज़्ज़त इसी तरह करनी चाहिये"

इमाम–ए–आज़म रह0, सैय्यदना अबू हनीफ़ा और आप रह0 के उस्ताद इमाम हम्माद बिन सुलेमान रह0 के घर के बीच सात गलियों का फ़ासला था लेकिन आप कभी उनके घर की तरफ़ पांव करके नहीं सोये। आप दर्स के दौरान अपने उस्ताद के बेटे के एहतराम में खड़े हो जाया करते थे। इमाम हम्माद रह0 की बहन आतिक़ा कहती थीं कि हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा हमारे घर की रुई धुनते, दूध और तरकारी ख़रीद कर लाते और इसी तरह बहुत से काम करते थे।

इमाम अहमद रह0 बीमारी की वजह से एक बार टेक लगाकर बैठे हुए थे। बातचीत के दौरान इब्राहीम बिन तहमान का ज़िक्र निकल आया। उनका नाम सुनते ही आप फ़ौरन सीधे होकर बैठ गये और कहा कि ये बात शान के ख़िलाफ़ होगी कि नेक लोगों का ज़िक्र हो और हम उसी तरह बैठे रहें।

इमाम अबू यूसुफ़ रह0 फ़रमाते हैं कि कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैनें नमाज़ पढ़ी हो और अपने उस्ताद सैय्यदना इमाम अबू हनीफ़ा के लिये दुआ न मांगी हो। एक रिवायत है कि आप हर नमाज़ के बाद पहले इमाम आज़म रह0 के लिये मग़फ़िरत की दुआ करते थे फ़िर अपने वालिदैन के लिये।

आप फ़रमाते मुझे अपने उस्ताद हज़रत इमाम शाफ़ई रह0 के सामने पानी पीने की कभी जुर्रत नहीं हुई।

हारून रशीद के दरबार में कोई आलिम तशरीफ़ लाते

तो बादशाह उनके एहतराम में खड़ा हो जाता। दरबारियों ने कहा कि इससे सल्तनत का रोब जाता रहता है तो उसने जवाब दिया कि अगर उलमा–ए–दीन की इज़्ज़त से सल्तनत का रोब जाता है तो जाने ही के क़ाबिल है। एक बार हारून रशीद ने एक नाबीना आलिम की दावत की और खुद उनके हाथ धुलाने लगा, इस दौरान आलिम से पूछा कि क्या आपको मालूम है कि आपके हाथों पर पानी कौन डाल रहा है। आलिम ने नहीं मे जवाब दिया। इस पर हारून रशीद ने जवाब दिया कि मैनें ये ख़िदमत खुद अन्जाम दी है। उस पर आलिमे दीन ने किसी ममनूनियत को ज़ाहिर नहीं किया बल्कि जवाब दिया कि हां इल्म की इज़्ज़त के लिये ऐसा किया है। उसने जवाब दिया बेशक यही बात है।

हारून रशीद ने अपने बेटे मामून को इल्म व अदब की इज़्ज़त के लिये इमाम असमई के सुपुर्द कर दिया था। एक दिन हारून इत्तिफ़ाक़ से उनके पास जा पहुंचा। देखा कि असमई अपने पांव धो रहे हैं और शहज़ादा पांव पर पानी डाल रहा है। हारून रशीद ने बरहमी से कहा। मैंने तो आपके पास इसलिये भेजा था कि आप इसको अदब सिखांएगे। आपने शहज़ादे को ये हुक्म क्यों नहीं दिया कि एक हाथ से पानी डाले और दूसरे हाथ से पांव धोए।

हज़रत यूसुफ़ बिन हुसैन रह0 का क़ौल है कि अदब से इल्म समझ में आता है और इल्म से अमल की दिशा मिलती है और अमल से हिकमत हासिल होती है।

असमई रह0 का क़ौल मशहूर हैः जो शख़्स इल्म हासिल करने में एक लम्हे की ज़िल्लत बर्दाश्त न कर सके वो फिर सारी उम्र जिहालत की ज़िल्लत में ज़िन्दगी गुज़ार देता है।

साहबे तालीमुल मुतइल्म लिखते हैं कि इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी रह0 को मैंने बादशाह के पास देखा कि बादशाह उनकी बेइन्तहा इज़्ज़त करता था और ये बात बार–बार कहता था कि मैंने ये सलतनत और इज़्ज़त केवल उस्ताद की ख़िदमत की वजह से हासिल की है। क्योंकि मैं अपने उस्ताद क़ाज़ी इमाम अबूज़ैद रह0 की बहुत ख़िदमत किया करता था, यहां तक कि मैंने तीस साल तक बराबर उनका खाना पकाया।

शरह अत्तरीक़तुल मुहम्मदिया में वाक़्या लिखा है कि जिस वक़्त इमाम हलवानी बुख़ारा से दूसरी जगह तशरीफ़ ले गये तो इमाम अबूज़र नूजी रह0 के अलावा उस इलाक़े के सभी शागिर्द सफ़र करके उनकी ज़ियारत को गये। मुद्दत के बाद जब इमाम अबूज़र नूजी से मुलाक़ात हुई तो उन्होने ग़ैर हाज़िरी पर अफ़सोस ज़ाहिर करते हुए माज़रत पेश की और वजह बतायी कि मां की ख़िदमत की वजह से हाज़िर न हो सका। उस वक़्त इमाम हलवानी रह0 ने फ़रमायाः तुमको उम्र तो ज़्यादा नसीब हो जाएगी मगर दर्स नसीब न होगा।

मोलवी सैय्यद मीर हसन इक़बाल के उस्तादों में वो बाकमाल हस्ती हैं जिन्होने आपकी तरबियत में यादगार किरदार अदा किया। जब इक़बाल को सर का ख़िताब दिया जाने लगा तो आपने कहा कि पहले मेरे उस्ताद सैय्यद मीर हसन शमसुल उलमा का ख़िताब दिया जाए तब मैं ये ख़िताब कुबूल करूंगा। इसी तरह बीमारी के दिनों में डाक्डरों की ज़िद के बावजूद आपने अपने उस्ताद मोहतरम के कहने पर गुर्दे का आपरेशन नहीं कराया। एक बार इक़बाल अपने कुछ दोस्तों के साथ गली में बैठे थे कि अचानक उन्होने दूर से मोलवी साहब को आते देखा तो जल्दी से उनके पास पहुंचे, इस हालत में कि उनके एक पांव में जूता भी न था। इक़बाल उनके पीछे–पीछे चले यहां तक कि मोलवी साहब को उनके घर पहुंचा कर वापस आये। अल्लामा इक़बाल ने एक बार कहा था कि यूरोप का कोई आलिम या फ़लसफ़ी ऐसा नहीं जिससे मैं न मिला और किसी न किसी विषय पर बिला झिझक बात न की हो। लेकिन न जाने क्या बात है कि शाह जी (मोलवी सैय्यद मीर हसन) से बात करते समय मेरी बात करने की ताक़त ख़त्म हो जाती है। बातचीत का खुलासा ये कि इस्लाम में उस्ताद को जो बुलन्द मक़ाम हासिल है दूसरे मज़हबों में इसका तसव्वुर भी मुश्किल है।

शेष : समाज सुधार और हमारी ज़िम्मेदारियां

ये आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के मिशन में शामिल है। यक़ीनन ये बात बहुत खुशी की है लेकिन ये अकेले बोर्ड की ज़िम्मेदारी नहीं है। वो रहनुमाई फ़रमाते हैं और तरीक़ाए कार उम्मत के सामने रखते हैं। अब हर व्यक्ति की ज़िम्मेदारी है कि वो इस मिशन में शरीक हो और जिस–जिस से हो सके वो बढ़–चढ़ कर इसमें हिस्सा ले। ख़ास तौर पर इस मिशन का आग़ाज़ अपने घरों से किया जाए। समाज लोगों से बनता है। अगर एक–एक व्यक्ति अपनी इस्लाह की कोशिश शुरू कर देगा तो समाज की इस्लाह इंशाल्लाह खुद बखुद होती चली जाएगी। ये बड़े–बड़े जलसे और इसकी सब तैयारियां इसीलिये हैं कि ये फ़िक्र हर ख़ास और आम में पैदा हो जाए।

आपके दीनी सवालात

और

उनके जवाबात

ज़ब्त विलादत

प्रश्नः क्या आप अपनी सहूलियत या सेहत के एतबार से दो बच्चों के बीच फ़ासला कर सकते हैं?

(सैय्यद फ़ारूक़ अली, इन्दौर)

उत्तरः केवल दो सूरतों में बच्चों के बीच फ़ासला करने की इजाज़त हैः

1– औरत की सेहत पर ग़लत असर पड़ने का अन्देशा हो जिसके बारे में कोई अच्छा डाक्टर सलाह दे।

2– बच्चों को मुनासिब मिक़दार में मां का दूध मिलने का अन्देशा न हो।

कुरआन के आने से पहले नमाज़

प्रश्नः आप स0अ0 नमाज़ में क्या तिलावत करते थे उस वक़्त जब कुरआन नाज़िल नहीं हुआ था?

(शेख़ अमीर मुहीउद्दीन, पुने)

उत्तरः कुरआन नाज़िल होने से पहले नमाज़ उस तरह नहीं थी जिस तरह नाज़िल होने के बाद हुई है। सलात का मतलब दुआ या मुनाजात होता है इसलिये पहले लोग नमाज़ में अस्तग़फ़ार की दुआ किया करते थे।

इस्लाम के इतिहास पर आधारित फ़िल्में

प्रश्नः आजकल कुछ इस्लामी फ़िल्में बन रहीं हैं जिसमें सहाबा और अम्बिया किराम को दिखाया जाता है, क्या ऐसी फ़िल्में देखना जाएज़ है? (ज़ीशान अहमद, नई दिल्ली)

उत्तरः फ़िल्मों में सहाबा और अम्बिया की जो सूरतें पेश की जाती हैं वो उनके मर्तबें और तक़द्दुस से बहुत घटिया है, अदाकार भी ख़राब, और काफ़िर तक होते हैं। इस तरह की फ़िल्मों से उनका मक़ाम नीचा होता है और हम उसको देखकर गुनहगार होते हैं, और ये सहाबा की अज़मत के ख़िलाफ़ हैं, इसलिये ईमानी तक़ाज़ा है कि इन चीज़ों से बचा जाए।

ईदुल फ़ित्र की नमाज़

प्रश्नः ईदुल फ़ित्र की पहली रकअत में अगर किसी की तकबीरें छूट जांए तो नमाज़ कैसे पूरी करेंगे?

(मुहम्मद सलीम शेख, मुम्बई)

उत्तरः अगर दो तकबीरें छूटने के साथ ही आपको नमाज़ मिल गयी तो इमाम के साथ तकबीरें पूरी करने के बाद फ़ौरन ही अपनी छूटी हुई तकबीरें पूरी कर लें।

ब्याज के कारोबार में नौकरी

प्रश्नः LIC और RCM में काम करना कैसा है, जबकि इनमें सूद की रक़म का इस्तेमाल होता है?

(शाहिद, चम्पारन, बिहार)

उत्तरः इस तरह की ख़ालिस सूदी कारोबार वाली कम्पनियों में काम करना जाएज़ नहीं है।

हिजाब (पर्दा)

प्रश्नः क्या औरत की उंगली पर्दे में शामिल है?

(मुस्तक़ीम बापू, गोधरा)

उत्तरः औरत की उंगली पर्दे में शामिल नहीं है।

बेवज़ू कुरआन छूना

प्रश्नः क्या कुरआन को बेवज़ू छुआ जा सकता है?

(ज़ीशान अहमद, नई दिल्ली)

उत्तरः कुरआन को बेवज़ू छूना जाएज़ नहीं है। तफ़सीर के मसले में है। अगर ऐसी तफ़सीर की किताब है जिसमें तफ़सीर का हिस्सा ज़्यादा है और कुरआन की आयत कम है तो छूना जाएज़ है लेकिन अगर कुरआन की आयतों का हिस्सा ज़्यादा है और तफ़सीर का हिस्सा कम है तो छूना जाएज़ नहीं होगा।

पढ़ाई के लिये ब्याज पर क़र्ज़

प्रश्नः क्या मैं अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिये ब्याज पर रक़म ले सकता हूं? जबकि ख़ानदान में कोई भी इतनी रक़म नहीं दे सकता है। (सिबग़तुल्लाह, हैदराबाद)

उत्तरः सूद पर रक़म नहीं ली जा सकती है।

नफ़िल नमाज़ का हुक्म

प्रश्नः क्या हम नफ़िल नमाज़ फ़र्ज़ नमाज़ों के फ़ौरन बाद पढ़ सकते हैं?क्या हम अपनी नफ़िल नमाज़ें मरहूमीन को ईसाले सवाब कर सकते हैं? (अक़्सा, लखनऊ)

उत्तरः नफ़िल नमाज़ फ़र्ज़ नमाज़ों के फ़ौरन बाद पढ़ी जा सकती है, और नफ़िल नमाज़ें मरहूमीन को ईसाले सवाब भी कर सकते हैं।

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

मुस्लिम लड़कियां तालीम के साथ तरबियत भी ज़रूरी

ये शिकायत आम होती जा रही है कि आजकल लड़कियां पढ़ी लिखी होने के बावजूद अच्छी और नेक बीवियां नहीं साबित हो रहीं हैं। वो ग़ालिब और इक़बाल, शेक्सपियर और डोन्टे के अदबी नुक़्तों को तो अच्छी तरह समझती हैं लेकिन अमली और समाजी ज़िन्दगी की हक़ीक़तों से अनजान हैं। आराम व आराइश के नये नये तरीक़ों को जानती लेकिन अख़लाक़ व सीरत की खूबियां उनमें नाम की नहीं। और ये शिकायत दुनिया के हर मुल्क में आम है। और लड़कियों के इस नुक़्स को पूरी शिद्दत के साथ महसूस किया जा रहा है। लेकिन इसका कोई व्यवहार नहीं। जब एहसासे शिद्दत से वो बेखुद हो जाते हैं तो कोई तरतीब सेन्टर खोल देते हैं या फिर कोई सेमिनार करा देते हैं लेकिन इस पैदा हो गये नुक़्स को दूर करने में नाकाम ही होते हैं।

इस सूरते हाल का सामना मुस्लिम समाज भी कर रहा है और ये बीमारी पूरी तेज़ी के साथ शरीफ़ घरानों में पहुंच रही है। अब तक तो ये रोना था कि मुसलमानों में तालीम का एहतिमाम नहीं है लेकिन अब तालीम पर पूरा ध्यान दिया जाता है फिर भी समाज मुहब्बत करने वाली माओं, वफ़ादार बीवियों, और सलीक़ामन्द, दीनपसन्द बहन बेटियों से महरूम है। इसकी बुनियादी वजह ये है कि मुसलमानों ने लड़कियों की तालीम पर ध्यान ज़रूर दिया लेकिन ग़लत ढ़ंग से, ऐसे स्कूलों में तालीम दिलायी जाती है जहां की व्यवस्था ख़राब है। या फिर ऐसा निसाब पढ़वाया जाता है लाज़मी नतीजा गुमराही है। मां–बाप मुतमईन हैं कि उन्होने अपने बच्चों को पढ़ने में लगा दिया मगर फिर उसकी फ़िक्र नहीं कि वो क्या पढ़ रही है और उनको जो माहौल मिल रहा है वो किस हद तक साज़गार है।

पिछले दौर में तालीब के साथ तरबियत उसका अहम हिस्सा हुआ करती है। मगर अब तालीम केवल तालीम है। स्कूलों, कालिजों में अख़लाक़ी क़द्रें, पाकीज़ा समाज़ पर ज़ोर नहीं बल्कि किताबों के पढ़ा देने या केवल विषय के रटा देने और इससे संबंधित नोट्स तैयार करा देने पर अधिक ध्यान दिया जाता है। लड़को और लड़कियों के बेजा मिलन पर न कोई रोक–टोक है और न ही होटल बाज़ी या पार्क बाज़ी पर कोई क़ैद। मानो कि तालीम व तरबियत अलग–अलग हिस्से में है। यही कारण है कि आज की लड़किया तालीम याफ़्ता तो होती हैं मगर तरबियत याफ़्ता बहुत ही कम।

तालीम के साथ तरबियत के इस संकट को घर के माहौल में दूर किया जा सकता है। और ये भी सच है कि जितनी अच्छी तरबियत मां–बाप कर सकते हैं, दूसरा कोई नहीं कर सकता, शर्त ये है कि उन्हें इसका एहसास हो और पूरी फ़िक्र भी। पुराने दौर में जब तालीम की कमी थी वालिदैन में ये एहसास पूरी शिद्दत के साथ होता था। तरबियत के मामले में किसी तरह गवारा नहीं की जाती थी। इसलिये इस समय की लड़कियां खाना पकाने में माहित तो होती थीं उनमें हद दर्जे का सब्र भी होता था। अच्छी बुरी बात बर्दाश्त करने का ग़ैर मामूली माद्दा होता था। वो जिस घर और माहौल में जाती थीं अपने आप को उस रंग में रंग लेती थीं और किसी बात से अजनबियत का एहसास नहीं होता था। कोई बात मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो जाए तो सर झुका कर बर्दाश्त करती थीं। ससुराल वालों की कमज़ोरियों को ज़बान पर न लाती थीं। शौहर में अगर ख़ामी होती तो उसको दूर करने की कोशिश करती थीं। यही वजह थी कि अल्लाह तआला की बरकत व नुसरत उनके हाल में शामिल रहती थी। उनकी ज़िन्दगियां खुशगवार और घर जन्नत का नमूना हुआ करता था। ऐसी ही बीवियों को अल्लाह के रसूल स0अ0 ने दुनिया का सबसे क़ीमती सामान क़रार दिया है।

लेकिन आजकल की लड़कियां में तालीम होने के बावजूद खूबियों की कमी है। आला अख़लाक़ी कद्रों की उनमें कमी है। वो अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ छोटी सी बात भी गवारा नहीं कर सकतीं। ससुराल वालों की कमियों को तलाश करना फिर उसको उछालना उनकी आदत सी बनती जा रही है। अपनी चिकनी चुपड़ी बातों और ज़ाहिरी नुमाइश से शौहर को घर वालों से बदज़न करने और फिर

उनको अलग करने आमादा करती हैं। ख़र्च में अगर ज़रा सी कमी हो जाए तो सारे एहसानात व मुहब्बत को भुला के घर सर पर उठा लेती हैं। और अगर खर्च में ज़्यादती हो तो नित नये फ़ैशन में बिना सोचे समझे ख़र्च करती हैं। अगर अपने साथ जहेज़ की लानत लेकर आयी है तो उसका गुरूर उसके सर चढ़कर बोलता है और फिर पूरे घर को बिखरने में देर नहीं लगती। इसका कारण केवल यही है कि आजकल की लड़कियों का अधिकतर समय घर के बाहर गुज़रता है। तालीम के नाम पर सारी आज़ादियां हासिल हैं। नंगेपन के चलन के सामने उनके पांव टिक नहीं पा रहे हैं और उसके तेज़ बहाव में उनके चेहरे का नूर, आंखों की हया, बातों में शर्म, सर का ढंकना, और बदन के कपड़े सब कुछ बहा चला जा रहा है। फिर भी वो ख़ुश हैं कि वो ज़माने के साथ साथ चल रही हैं।

यूरोप व अमरीका और पश्चिम की पैरवी करने वाले घरानों की हालत हमारे सामने है जहां लगभग सभी लड़कियां पढ़ी लिखी होती हैं लेकिन अख़लाक़ी बीमारी और नगांपन उनमें बिल्कुल आम है। शादी के बग़ैर ही हनीमून ख़राब चीज़ नहीं है। पचास प्रतिशत लड़कियां शादी के बाद तलाक़ ले लेती हैं या खुद दे देती हैं। और बाक़ी के संबंध उनके पतियों के साथ रस्मी से होते हैं। उनके बीच रिश्ता एक समझौते के तहत लटका रहता है। यही कारण है कि अब आम तौर पर तन्हाई की ज़हनियत पैदा होती जा रही है। इस पर तरफ़ा ये कि इसे रोशनख़्याली कहा जाता है। और ज़ाहिरी चमक–दमक की आड़ में जो परेशानी, ज़हनी और फ़िकरी कशाकश और जो तनाव की सी कैफ़ियत है उससे आंखे चुराई जा रही हैं। इस अख़लाक़ी व सक़ाफ़ती गिरावट की वजह यही है कि लड़कियां तालीमयाफ़्ता ज़रूर हैं मगर तरबियत याफ़्ता नहीं। बड़ी–बड़ी डिग्रियां तो उनको दी जाती हैं मगर साथ ही ये नहीं बताया जाता कि सबसे बड़ा ख़ज़ाना उसकी इज़्ज़त व पाकदामनी है। उसकी शर्म व हया ही उसका गहना और श्रंगार है। शादी के बाद अपने घर को सब्र और दयानतदारी के साथ चलाना उसकी सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है बल्कि उनकी तबियत कुछ इस क़िस्म की है कि वो घरों के सुकून भरे माहौल के बजाए, रेस्टोरेन्ट, होटलों और पार्कों में वक़्त बिताना ज़्यादा बेहतर समझती हैं। यहां तक कि औलाद पैदा करना भी उनको गवारा नहीं कि बच्चे को जनना और उसको पालना पोसना उनके हुस्न व जमाल के ख़िलाफ़ है। इसलिये ऐसे ज़रिये इस्तेमाल किये जा रहे हैं जिनमें औलाद भी पैदा न हो और अगर ग़लती से हमल ठहर भी जाता है तो उसको गिराने में कोई तकलीफ़ नहीं होती। इस तरह का माहौल जहां भी होगा वहां लोग ख़ैर के जज़्बे से महरूम और इन्सानियत के जज़्बे से बेबहरा होंगे। उनकी फ़ितरत में तामीर के बजाए बिखराव के तत्व होंगे। और ऐसा समाज इन्सानियत के जिस्म में एक फोड़े से ज़्यादा कुछ भी नहीं। जब इस समाज की ज़ाहिरी चमक–दमक काफ़ूर होगी चेहरों पर मला हुआ मेकअप खत्म होगा तो ये हक़ीक़त सामने आ जाएगी कि इन्सान ने सुकून पाने की जितनीकोशिशें की हैं वो सब बेकार हैं। और ज़िन्दगी गुज़ारने के सारे ढंग बेरंग हैं। और ज़िन्दगी गुज़ारने का जो निज़ाम इस्लाम ने दिया है उसी में अस्ल भलाई और अस्ल सुकून है। और इसकी शुरूआत तरबियत से है। जोकि इल्म के हासिल करने का मक़सद है।

अल्लाह के रसूल स0अ0 ने अपने आने का एक मक़सद भी यही फ़रमाया: (मैं मकारिम अख़लाक़ के लिये भेजा गया हूं। और उन्हीं अख़लाक़ को ज़िन्दगियों में पैदा करने का नाम तरबियत है)

पश्चिम की नाक़िस तालीम के साथ वहां की तमाम अख़लाक़ी बीमारियां भी मुसलमानों में तेज़ी के साथ फैलती जा रही हैं। और ये एक ऐसा बहाव है जिसमें ईमान तक बहा जा रहा है। ऐसे हालात में मां–बाप की बड़ी ज़िम्मेदारी है कि अपनी बच्चियों की तालीम के साथ उनकी तरबियत पर ख़ास ध्यान दें। सिर्फ़ तालीम दिला देना ही काफ़ी नहीं। अगर तरबियत न हो तो ऐसा इल्म मुफ़ीद होने के बजाए जान का वबाल साबित हो सकता है। और क़यामत के दिन यही इल्म ख़िलाफ़ गवाही देगा और इसकी गिरफ़्त से मां–बाप व सरपरस्त और उस्ताद भी न बच सकेंगे। लिहाज़ा ज़रूरत है कि घर पर लड़कियों की तरबियत का पूरा इन्तिज़ाम हो। उन्हे अच्छे अख़लाक़ की तालीम दी जाए। स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले सबक़ का जाएज़ा लिया जाए। और उसके ख़राब पहलू को छांटकर अच्छी बातों को समझाया जाए। और अल्लाह के रसूल स0अ0 की सुन्नतें और बतलायी हुई दुआंए याद करायी जांए और इसी पर अमल कराया जाए। फिर इन्शाअल्लाह हमारे समाज में पाक सीरत बहनों, बेटियों और तरबियत करने वाली माओं की कमी न होगी। और पूरा समाज इस्लामी तालीम का पैरोकार होगा। और पूरी दुनिया के लिये नमूना और हिदायत का ज़रिया होगा। और अगर ये कोशिश कामयाब हो गयी तो महशर के रोज़ अल्लाह के रसूल स0अ0 का साया नसीब होगा।

(शेष: पेज 20 पर)

हुज़ूर स०अ० के आने की खुशख़बरी देने वाला इन्जील का नुस्ख़ा बरामद

पापा–ए–रोम बेन्डेक्ट शाइज़्ड दसवें ने अन्जामकार इन्जील मुक़द्दस का वो नायाब तोहफ़ा मुआयने के लिये मंगवा ही लिया जिसमें हज़रत ईसा अलै0 खुद उन्ही की ज़ुबानी हज़रत मुहम्मद स0अ0 की आने की बशारत दी गयी हैं। ये नादिर व नायाब नुस्ख़ा 1500 ई0पू0 का बताया जाता है। इंग्लैन्ड के अख़बार डेली मेल के अनुसार पुरानी जनता की ज़बान में इन्जील का ये नुस्ख़ा आज से बारह साल पहले खोजा गया था जो अभी भी ईसाईयों के धार्मिक केन्द्र वेटिकन (टंजपबंद) में बहस का मुद्दा रहा फिर भी इसे सामने नहीं लाया गया। आरामी ज़बान में लिखी हुई इस इन्जीली नुस्खे में लिखा है कि एक वाक़्या एक काहन ने हज़रत ईसा अलै0 से अपने बाद आने वाले नबी के बारे में पूछा तो उन्होने जवाब में फ़रमाया था कि उनका नाम मुहम्मद स0अ0 होगा और वो बरकत वाला होगा।

अलअरबिया डाट नेट के अनुसार तुर्की के सक़ाफ़ती वज़ीर के मुताबिक़ इस नादिर और नायाब मुक़द्दस नुस्ख़े की क़ीमत 22 मिलियन डालर बतायी गयी है और ये नादिर नुस्ख़ा जिल्द पर सुनहरे अक्षरों मे लिखा गया है जिसकी क़ीमत 24 मिलियन डालर रखी गयी है। तुर्की के सक़ाफ़ती वज़ीर के मुताबिक उस नायाब मुक़द्दस नुस्ख़े को क्लेसाओं और पादरियों ने इसलिये पोशीदा रखा था कि उसमें बयान की गयी भविष्यवाणियां कुरआन करीम में बयान की गयी हक़ीक़तों से काफ़ी हद तक समानता रखती हैं। रिपोर्ट के अनुसार पुराने इन्जीली नुस्खे की लिखावट और उसकी भविष्यवाणियां इस्लाम के नबूवत के अक़ीदे के अनुसार हैं। इसके नुस्ख़े में हज़रत ईसा अलै0 के बाद हज़रत मुहम्मद स0अ0 की नबूवत की खुशख़बरी सुनायी गयी है। तुर्क वज़ीर के अनुसार इन्जील के इस नायाब नुस्ख़े को 2000 में बहरे मतूसत के क़रीब एक इलाक़े में छिपा दिया गया था। अब भी ये नुस्ख़ा तुर्क हुकूमत ही के क़ब्ज़े मे है। बारह साल पहले ये नुस्ख़ा मिलने के बाद गुम हो गया था कहा गया था कि इसे पुरातत्व विभाग के स्मगलरों ने चोरी कर लिया है। तुर्की में एक ईसाई मज़हबी रहनुमा एहसान अज़हक ने तुर्की अख़बार ज़मान को बताया कि इन्जील मुक़द्दस का ये नायाब नुस्ख़ा हज़रत ईसा अलै0 के उन बारह साथियों के जिन्हें क़दीस बुरनाबास के नाम से जाना जाता है। पैरोंकारों के दौर में पांचवी या छटी सदी का है क्योंकि कुदैस बुरनाबास पहली सदी ईसवी में मौजूद थे। अन्करा में इल्म लाहूत के माहिर प्रोफ़ेसर उमर फ़ारूक़ हरमान ने बताया कि मख़तूते की इल्मी जांच परख से इसकी सही उम्र निश्चित करने में मदद मिलेगी और मालूम हो सकेगा कि उसके लिखने वाले कुदैस बरनाबास थे या उनके किसी पैरोकार ने इसको लिखा है।

शेष : मुस्लिम लड़कियां .....

आपने इरशाद फ़रमायाः जिसने दो लड़कियों (कई रिवायतों में तीन) की परवरिश की, उनकी तालीम व तरबियत का एहतिमाम किया, उनकी शादी की, और उनके साथ अच्छा सुलूक रखा तो वो क़यामत के दिन मेरे साथ इस तरह होगा (इतना कहकर आप स0अ0 ने अपनी दोनों उंगलियां मिला दीं)

अगर इस ओर ध्यान न दिया गया तो हमारा समाज भी पश्चिमी समाज की तरह तबाह और बर्बाद हो जाएगा। लड़कियों की ज़ाहिरी टीप–टाप हमारे समाज के बिल्कुल नाकारा है। ज़ाहिरी टीप–टाप से कहीं ज़्यादा अन्दर की खूंबियों की ज़रूरत है। और ये अन्दर की खूबियां अख़लाक़ और मज़हबी तालीम और अच्छी तरबियत के बग़ैर लड़कियों में कुछ पैदा नहीं हो सकतीं। और इसके लिये अपने घर से शुरूआत की ज़रूरत है। बचपन से ही इस्लामी माहौल बनाने और पाकीज़ा फ़िज़ा पैदा करने की ज़रूरत है। अल्लाह पाक अमल की तौफ़ीक अता फ़रमाये।

शेष : हमारा ये दस्तूर नहीं

उसने सुल्तान को ये कहते हुए सुना कि वो सुल्तान को ये कहते हुए सुना कि वो उससे झोपड़ी बेचने की दरख़्वास्त करता है। इस बार वो इनकार नही कर सका, क्योंकि सुल्तान ने उसकी क़ीमत उससे कहीं ज़्यादा पेश की थी जितनी कि इससे पहले पेश की गयी थी। और इस तरह झोपड़ी ख़रीदी गयी और इस जगह जामेया सुलेमानिया तामीर की गयी। जो इस्लामी तामीर के फ़न की बेजोड़ मिसाल है।

इस प्रकार के वाक़्ये इस्लामी इतिहास में बहुत अधिकता से मिलते हैं जो ये बताते हैं कि मुस्लिम सुल्तानों ने ताक़त, और क़ुदरत के बावजूद अज़ीमतर मक़सदों को लिये भी छोटी सी छोटी सी भी नाइंसाफ़ी को पसन्द नहीं किया। और उनकी इसी इन्साफ़ पसन्दी ने उन्हें इतिहास का एक हिस्सा बना दिया।

ग़ैर इस्लामी अख़लाक

क़ुरआन व सुन्नत की रोशनी में

जुल्म

हक़ीक़त में वो सारे काम जो बेहयाई, बेशर्मी और कुफ़्र व शिर्क से संबंध रखते हैं वो जुल्म के दायरे में आते हैं लेकिन यहां मुराद उस जुल्म से है जो इन्सान इन्सान पर करता है। इस्लामी शरीअत में जुल्म हराम है।

(अनुवाद: कह दो कि मेरे रब ने बेहयाई के कामों को जो खुले हो या छिपे और गुनाह व हक़ के बग़ैर सरकशी को हराम ठहराया)

एक तरफ़ इस्लाम ने जुल्म की जड़ उखाड़ फ़ेंकी है तो दूसरी ओर ज़ालिमों से सहयोग न देने का हुक्म दिया है। और अपनी बिरादरी और भाई की मदद करने का सलीक़ा सिखाया।

(अनुवाद: तक़वा और नेकी के कामों में एक दूसरे की मदद करो और गुनाह व जुल्म पर एक दूसरे की मदद न करो।)

हदीस में है कि हज़रत स०अ० ने ये हदीस कुदसी बड़े असरदार अन्दाज़ में सुनाई: फ़रमाया, "अल्लाह तआला अपने बन्दों से इरशाद फ़रमाता है कि मेरे बन्दे मैंने अपने लिये और तुम्हारे लिये आपस में जुल्म को हराम किया तो तुम एक दूसरे पर जुल्म न किया करो।" मुस्लिम

जुल्म ऐसा नामुबारक और नापाक काम है जिससे ख़ैर व फ़लाह की कभी उम्मीद नहीं की जा सकती चाहे ज़ाहिरी आंखें ज़ालिमों के दौर दौरे को देख रही हों। और वो खुदा की पकड़ से बचते चले जा रहे हों लेकिन ये याद रखना चाहिये कि खुदा के यहां देर तो हो सकती है लेकिन अन्धेर नहीं। और ज़ालिम को जुल्म का बदला मिलकर रहता है।

जुल्म की टहनी कभी फलती नहीं

नाव काग़ज़ की सदा चलती नहीं

और इरशाद नबवी स०अ० है कि मज़लूम की बद्दुआ से बचो क्योंकि खुदा और उसके बीच कोई पर्दा नहीं रहता। और उसकी फ़ौरन सुनी जाती है और सात आसमानों के ऊपर से उसकी मदद आ जाती है।

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
Arafat Kiran
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

VOLUME 4

APRIL 2012

ISSUE 04

Our Daily Mobile SMS sevice

اپنے موبائل پر روزانہ اسلامی MSG حاصل کریں،
ٹائپ کریں Arafat اور بھیج دیں 56767 پر۔
نوٹ: یہ سروس بالکل مفت ہے اور DND نمبروں پر بھی جاری ہے۔

To get daily messages on your mobile, Just
Type: Arafat & Send it to : 56767

Please note:

This service completely free of cost & will also work on DND activated Mobile numbers.

ہماری ویب سائٹ

www.abulhasanalinadwi.org

دار عرفات مرکز الإمام أبي الحسن الندوي
کی سرگرمیوں اور اس کی پیش رفت سے واقفیت،
مفکر اسلام حضرت مولانا سید ابوالحسن علی ندویؒ کی تقاریر، تصنیفات، افکار،
اور دیگر پہلوؤں سے متعلق معلومات

☆ درسِ قرآن ☆ درسِ حدیث ☆ رمضان المبارک کے خطاب
☆ توسیعی مقالات وخطبات ☆ آپ کے دینی مسائل اور ان کا حل

دار عرفات مرکز الإمام أبي الحسن الندوي
تکیہ کلاں رائے بریلی (یوپی) انڈیا

Mob.:9918818558

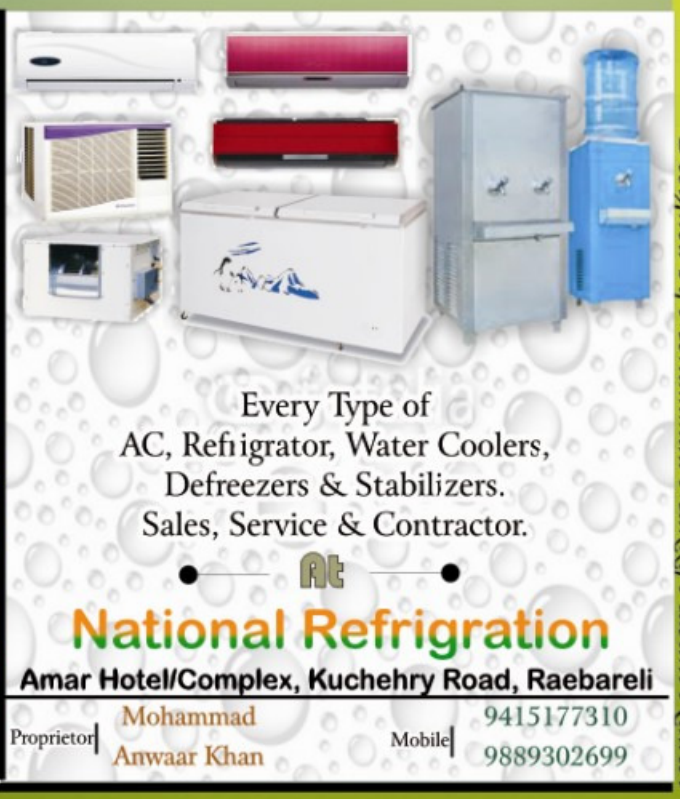

Designed by Mohammad Makky Hasani Nadvi

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile: 9918385097, 9918818558
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche, Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.